WWW.Kanchanujala.in

हिन्दी दैनिक

kanchanujala14@gmail.com

कंचन उजाला

लखनऊ से प्रकाशित

सच्चाई के साथ

कुंडली भाग्य में करण और प्रीता रोमांटिक डांस करते आए नजर

वर्षः 01 अंकः 294 | लखनऊ, बुधवार, 14 अक्टूबर, 2020 | पृष्ठ- 6 | मूल्य - 1 रुपये

सत्ता और राजनीति के जरिये हमेशा समाज की भलाई की विखे पाटिल ने: प्रधानमंत्री

नयी दिल्ली, एजेंसी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने आज कहा कि डाक्टर बालासाहेब विखे पाटिल ने सत्ता और राजनीति के जरिए हमेशा समाज की भलाई का काम किया और राजनीति को समाज के सार्थक बदलाव का माध्यम बनाने का प्रयास किया। श्री मोदी ने महाराष्ट्र के वरिष्ठ नेता रहे बालासाहेब विखे पाटिल की मराठी में लिखी आत्मकथा 'देह वीचवा करणी' का वीडियो कांफ्रेन्स के मामध्य से विमोचन किया। इसका अर्थ है अपना जीवन किसी नेक काम के लिए समर्पित कर देगा। इस मौके पर प्रधानमंत्री ने 'प्रवर ग्रामीण शिक्षा समाज' संस्था का नाम डा विखे पाटिल के नाम पर लोकनेते डॉ. बालासाहेब विखे पाटिल प्रवर रूरल एजुकेशन सोसाइटी भी रखा। डा विखे पाटिल के जीवन पर प्रकाश डालते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि उन्होंने सत्ता और राजनीति के जरिए हमेशा समाज की भलाई का प्रयास किया। उन्होंने हमेशा इसी बात पर बल दिया कि राजनीति को समाज के सार्थक बदलाव का माध्यम कैसे बनाया जाए, गांव और गरीब की समस्याओं का समाधान कैसे हो। गांव, गरीब, किसान का जीवन आसान बनाना, उनके दुख, उनकी तकलीफ कम करना, विखे पाटिल जी के जीवन का मूलमंत्र रहा है। उन्होंने कहा कि डॉक्टर बालासाहेब विखे पाटिल की आत्मकथा का विमोचन आज भले हुआ हो लेकिन उनके जीवन की कथाएं महाराष्ट्र के हर क्षेत्र में मिलेंगी। गाँव गरीब के विकास के लिए, शिक्षा के लिए, उनका योगदान हो, महाराष्ट्र में सहकारिता की सफलता का उनका प्रयास हो, ये आने वाली पीढ़ियों को हमेशा प्रेरणा देगा। उन्होंने कहा कि सिर्फ महाराष्ट्र ही नहीं, अटल जी की सरकार में मंत्री रहते हुए उन्होंने देश के अनेक क्षेत्रों में सहकारिता को बढ़ावा दिया, उसके लिए प्रयास किया। ये उन्हीं का प्रयास है कि जो इलाका कभी अभाव में जीने को मजबूर था, आज उसकी तस्वीर बदल गई है एक प्रकार से उनके लिए सहकारिता सबके साथ से सबके कल्याण का मार्ग थी।

कोरोना मुक्त होने वालों की संख्या में लगातार इजाफा

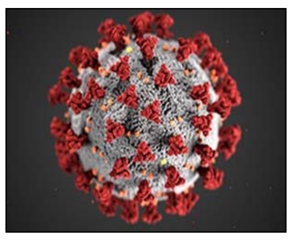

नयी दिल्ली, एजेंसी। कोरोना वायरस के संक्रमण की जांच में तेजी एवं समुचित उपचार से इस बीमारी से मुक्त होने वालों की संख्या में लगातार इजाफा हो रहा है और पिछले 10 दिनों में प्रतिदिन 75-80 हजार से अधिक मरीज स्वस्थ हुए हैं जबकि इसकी तुलना में नये मामलों में कमी आयी है। केन्द्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय की ओर से मंगलवार को जारी आंकड़ों के मुताबिक पिछले 24 घंटों में 77,760 कोरोना संक्रमितों के स्वास्थ्य में सुधार हुआ , जिन्हें विभिन्न अस्पतालों से छुट्टी दे दी गयी। देश में अब तक 62,27,295 मरीजों ने कोरोना को मात दी है। इसी अवधि में 55,342 लोगों के कोरोना से संक्रमित होने की पुष्टि होने के बाद संक्रमण का आंकड़ा 71,75,880 हो गया। पिछले 24 घंटों के दौरान 706 संक्रमित अपनी जान गंवा बैठे और इस बीमारी से मरने वालों की संख्या 1,09,856 हो गयी है। कोरोना संक्रमण के नये मामलों में कमी आने के कारण सक्रिय मामले 23,124 घटकर 8,38,729 हो गये। देश में अभी सक्रिय मामलों का प्रतिशत 11.69 और रोगमुक्त होने वालों की दर 86.78 प्रतिशत है जबकि मृत्यु दर 1.53 फीसदी रह गयी है। कोरोना महामारी से सबसे अधिक प्रभावित महाराष्ट्र में पिछले 24 घंटों के दौरान सक्रिय मामले 8732 कम होकर 2,12,905 रह गये हैं जबकि 165 लोगों की मौत होने से मृतकों की संख्या 40,514 हो गयी है। इस दौरान 15,656 लोग संक्रमणमुक्त हुए जिससे स्वस्थ हुए लोगों की संख्या बढ़कर 12,81,896 हो गयी। दक्षिणी राज्य कर्नाटक में पिछले 24 घंटों के दौरान मरीजों की संख्या में 4494 की कमी आयी और अब 1,15,795 सक्रिय मामले हैं। राज्य में मरने वालों का आंकड़ा 10,036 पर पहुंच गया है तथा अब तक 5,92,084 लोग स्वस्थ हुए हैं।

कई वैक्सीन निर्माताओं से भारत के लिए खरीदी जायेगी वैक्सीन: हर्षवर्धन

नयी दिल्ली, एजेंसी। केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री डॉ हर्षवर्धन ने आज कहा कि कोरोना वैक्सीन के अगले साल की शुरुआत तक तैयार होने की संभावना है तथा देश की बड़ी आबादी को देखते हुए इसकी पर्याप्त आपूर्ति के लिए कई वैक्सीन निर्माताओं से संपर्क किया जायेगा। डॉ हर्षवर्धन ने इससे पहले संडे संवाद में भी यह बात दोहरायी थी कि देश की आबादी को देखते हुए वैक्सीन की आपूर्ति किसी एक स्रोत से की ही नहीं जा सकती है और इसके लिए कई स्रोतों से यानी वैक्सीन निर्माताओं से वैक्सीन की खरीद करनी होगी। कोविड-19 के लिए गठित मंत्री समूह की मंगलवार को आयोजित 21वीं बैठक को वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिये संबोधित करते हुए केंद्रीय मंत्री ने साथ ही देश कोरोना संक्रमण की स्थिति और उससे जुड़े पहलुओं पर चर्चा की। उन्होंने आगामी त्योहारी मौसम में कोरोना संक्रमण के प्रसार के बढ़ने की आशंका पर चिंता व्यक्त की और सभी से अपील की कि वे त्योहारों को मनाने के दौरान कोविड-19 अनुकूल व्यवहार का पालन जरूर करें। उन्होंने साथ ही कहा कि सर्दी के मौसम में कोरोना संक्रमण का खतरा बढ़ जाता है और ऐसे में लोगों को कोविड-19 अनुकूल व्यवहार अपनाने के प्रति प्रेरित करने के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देशव्यापी जन आंदोलन की शुरूआत की है। डॉ हर्षवर्धन ने कई माह से अनवरत कोरोना के खिलाफ अग्रिम मोर्चे पर डटे कोरोना योद्धाओं के प्रति आभार व्यक्त किया। उन्होंने साथ ही मंत्री समूह को अवगत कराया कि देश में कोरोना के खिलाफ जन स्वास्थ्य व्यवस्था किस तरह सुदृढ की गयी और इससे क्या सकारात्मक परिणाम रहे।

राज्यसभा की 11 सीटों के लिए द्विवार्षिक चुनाव नौ नवम्बर को

नयी दिल्ली, एजेंसी। राज्यसभा की 11 सीटों के लिए द्विवार्षिक चुनाव नौ नवम्बर को होंगे। वर्तमान में राज्यसभा सदस्यों हरदीप सिंह पुरी , रामगोपाल यादव, राज बब्बर, पी एल पुनिया, अरुण सिंह, चंद्रपाल सिंह यादव, रविप्रकाश वर्मा, वीर सिंह, राजाराम , जावेद अली खान और नीरज शेखर का कार्यकाल 25 नवम्बर को समाप्त हो रहा है। इनमें 10 सदस्य उत्तरप्रदेश से निर्वाचित हुए थे जबकि एक सीट उत्तराखंड से कांग्रेस के राज बब्बर उच्च सदन के सदस्य बने थे। चुनाव आयोग के अनुसार उत्तर प्रदेश की 10 और उत्तराखंड की एक सीट के चुनाव के लिए अधिसूचना 20 अक्टूबर को जारी होगी और नामांकन पत्र दाखिले की अंतिम तारीख 27 अक्टूबर होगी जबकि नामांकन पत्रों की जांच 28 अक्टूबर को होगी। नाम वापस लेने की अंतिम तारीख दो नवम्बर होगी। मतदान नौ नवम्बर को सुबह नौ से शाम चार बजे तक होगा। कोविड-19 के दिशानिर्देशों के तहत सभी लोग मास्क लगाकर और सामाजिक दूरी बनाकर मतदान करेंगे।

चीन के साथ विवाद पर वार्ता के बाद भारत ने कहा- जारी रहेंगी बैठकें

नई दिल्ली, एजेंसी। भारत और चीन के बीच सोमवार को एलएसी पर तनाव को कम करने के लिए हुई सातवें दौर की कॉर्प्स कमांडर स्तर की बैठक में दोनों देश कूटनीतिक और सैन्य संवाद जारी रखने पर सहमत हुए। भारत सरकार ने मंगलवार को यह जानकारी दी। सैन्य वार्ता के बाद भारतीय सेना ने कहा- ÷वास्तविक नियंत्रण रेखा पर सैनिकों के पीछे हटने के मुद्दे पर भारत और चीन के बीच गंभीर, व्यापक और रचनात्मक बातचीत हुई। दोनों पक्षों ने रचनात्मक चर्चा की और इस दौरान एक दूसरे की स्थिति के प्रति आपसी समझ बढ़ी। भारतीय सेना ने कहा- एलएसी पर भारत की तरफ चुशुल में हुई कॉर्प्स कमांडर स्तर की वार्ता के दौरान भारत और चीन, सैन्य तथा राजनयिक माध्यम से संवाद और संपर्क बनाए रखने पर सहमत हुए। भारत चीन वार्ता में इस बात पर सहमति बनी कि यथाशीघ्र सैनिकों के पीछे हटने के लिए दोनों पक्षों को स्वीकार्य समाधान निकालने के वास्ते संवाद बनाये रखा जाएगा। भारतीय सेना ने आगे कहा- भारत और चीन अपने नेताओं के बीच बनी महत्वपूर्ण समझ को गंभीरतापूर्वक क्रियान्वित करने पर सहमत है। भारत और चीन के बीच पूर्वी लद्दाख में स्थिति को संबोधित करने के लिए कोर कमांडर स्तर की बैठक 11 घंटे से अधिक समय तक चली और सोमवार को लगभग रात 11:30 बजे समाप्त हुई। सातवें दौर की सैन्य वार्ता में बीजिंग से अप्रैल पूर्व की यथास्थिति बहाल करने और विवाद के सभी बिन्दुओं से चीनी सैनिकों की पूर्ण वापसी करने को कहा। उन्होंने बताया कि पूर्वी लद्दाख में कोर कमांडर स्तर की वार्ता दोपहर लगभग 12 बजे वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) पर चुशूल क्षेत्र में भारतीय इलाके में हुई और रात साढ़े आठ बजे के बाद भी जारी रही।

प्रोफाइल सत्यापन तंत्र विकसित करने संबंधी याचिका पर केंद्र को नोटिस

नयी दिल्ली, एजेंसी। उच्चतम न्यायालय ने सोशल मीडिया पर आपत्तिजनक सामग्री डालने की प्रवृत्ति पर रोक लगाने के लिए प्रोफाइल सत्यापन तंत्र विकसित करने के निर्देश देने संबंधी याचिका पर मंगलवार को केंद्र सरकार को नोटिस जारी किया। मुख्य न्यायाधीश शरद अरविंद बोबडे की अध्यक्षता वाली तीन-सदस्यीय खंडपीठ ने पुणे के भारती विद्यापीठ डीम्ड विश्वविद्यालय के दो विधि छात्रों- स्कंद बाजपेयी और अभ्युदय मिश्रा की याचिका की सुनवाई के दौरान नोटिस जारी करके केंद्र सरकार से जवाब तलब किया। छात्रों की ओर से दाखिल याचिका में सभी प्रोफाइल सत्यापित करने की मांग की गई है, ताकि अवैध और गलत पोस्ट को हटाया जा सके। याचिकाकर्ताओं ने अश्लील सामग्रियों के कारोबार से जुड़े अकाउंट धारकों के खिलाफ कार्रवाई के निर्देश देने का भी अनुरोध न्यायालय से किया है। याचिकाकर्ताओं का कहना है कि ऐसे लोग झूठे प्रोफाइल के जरिये अश्लील सामग्रियां पोस्ट करते हैं।

शरद पवार ने पीएम मोदी को लिखा लेटर, गवर्नर की भाषा पर उठाए सवाल

मुंबई, एजेंसी। महाराष्ट्र में धार्मिक स्थलों को लेकर रायपाल भगत सिंह कोश्यारी द्वारा मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे को लिखे पत्र के बाद अब एनसीपी प्रमुख शरद पवार ने पीएम मोदी को पत्र लिखा है। पवार ने रायपाल कोश्यारी के पत्र की भाषा पर सवाल उठाए हैं। पवार ने पीएम मोदी को लिखे पत्र में कहा है कि वे कोश्यारी द्वारा लिखे गए पत्र की असंयमित भाषा से स्तब्ध हैं। इससे पहले, मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे को भेजे पत्र में कोश्यारी ने कहा था कि उन्हें प्रतिनिधिमंडलों से तीन प्रतिवेदन मिले हैं जिनमें धर्मस्थलों को खोले जाने की मांग की गई है। उन्होंने पत्र मे लिखा कि क्या आप अचानक सेक्युलर हो गए हैं? इसके जवाब में ठाकरे ने सवाल किया कि क्या कोश्यारी के लिए हिंदुत्व का मतलब केवल धार्मिक स्थलों को पुनः खोलने से है और क्या उन्हें नहीं खोलने का मतलब धर्मनिरपेक्ष होना है। उद्धव ठाकरे ने कहा कि क्या धर्मनिरपेक्षता संविधान का अहम हिस्सा नहीं है, जिसके नाम पर आपने रायपाल बनते समय शपथ ग्रहण की थी। उन्होंने कहा, लोगों की भावनाओं और आस्थाओं को ध्यान में रखने के साथ साथ, उनके जीवन की रक्षा करना भी अहम है। लॉकडाउन अचानक लागू करना और समाप्त करना सही नहीं है।

योगी सरकार का बड़ा फैसला

राय कर्मचारियों को त्योहार पर देगी एडवांस

लखनऊ, एजेंसी। केंद्र की तर्ज पर यूपी सरकार भी अपने कर्मचारियों को त्योहार से पहले अग्रिम धनराशि देने की तैयारी कर रही है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने राय के वित्त विभाग को कर्मचारियों के लिए केंद्र जैसी योजना तैयार करने के निर्देश दिए हैं। मालूम हो कि केंद्र सरकार ने सोमवार को अपने सभी अधिकारियों और कर्मचारियों को त्यौहारों के मौके पर 10,000 रुपये का ब्याज मुक्त अग्रिम धनराशि देने का फैसला किया था। उपभोक्ता खर्च बढ़ाकर अर्थव्यवस्था में मांग बढ़ाने की योजना के तहत सरकार ने यह कदम उठाया था। वहीं, मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने रोजगार को लेकर भी बड़ा ऐलान किया। उन्होंने कहा कि 16 अक्तूबर को बेसिक शिक्षा विभाग के तहत 31 हजार से अधिक सहायक अध्यापकों को नियुक्ति पत्र वितरित किए जाएंगे। 17 अक्तूबर से महिलाओं और बालिकाओं की सुरक्षा व सम्मान के लिए मिशन शक्ति व्यापक जागरूकता अभियान का शुभारम्भ होगा। मुख्यमंत्री मंगलवार को अनलॉक व्यवस्था की समीक्षा कर रहे थे। उन्होंने विगत 26 दिनों में प्रदेश में कोविड पॉजिटिव के सक्रिय मामलों में 44 प्रतिशत की कमी पर संतोष जताया। उन्होंने कहा कि अनलॉक की प्रक्रिया को आगे बढ़ाते हुए आने वाले समय में कई अन्य गतिविधियां भी शुरू हो जाएंगी। इसलिए लोगों को संक्रमण से बचाव और सुरक्षा के संबंध में निरन्तर जागरूक किया जाए। उन्होंने कहा कि कोविड-19 के प्रोटोकाल के पूर्ण पालन के लिए लोगों को प्रेरित और प्रोत्साहित किया जाए। मुख्यमंत्री ने कोविड-19 की रिकवरी दर की जनपदवार निगरानी के निर्देश दिए हैं। उन्होंने कहा कि लखनऊ में कोविड-19 की रिकवरी दर को और बेहतर किया जाए। इसके लिए एक प्रभावी रणनीति तैयार कर जनपद में टेस्टिंग कार्य में वृद्धि के साथ-साथ एसजीपीजीआई, केजीएमयू तथा आरएमएलआईएमएस में उपचार व्यवस्था को सुदृढ़ बनाया जाए। उन्होंने अपर मुख्य सचिव स्वास्थ्य को अयोध्या, वाराणसी तथा सीतापुर में भी रिकवरी दर में वृद्धि सुनिश्चित कराने के निर्देश दिए। मुख्यमंत्री ने कहा कि महिलाओं तथा बालिकाओं की सुरक्षा व सम्मान के मद्देनजर शारदीय नवरात्र से शुरू हो रहे मिशन शक्ति अभियान में समाज के सभी वर्गों की सक्रिय भागीदारी कराई जाए। अभियान के तहत हेल्प लाइन नम्बर भी जारी किया जाए। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रत्येक जिले में नियुक्ति पत्र वितरण व मिशन शक्ति कार्यक्रम आयोजित किए जाएं। उन्होंने जिलों के प्रभारी मंत्री सहित अन्य जनप्रतिनिधियों को आमंत्रित करने के निर्देश दिए। मुख्यमंत्री ने कहा कि वर्तमान में स्वछता तथा सैनिटाइजेशन के सम्बन्ध में संचालित प्रदेशव्यापी विशेष अभियान से जनप्रतिनिधियों को भी जोड़ा जाए।

जाति, धर्म, क्षेत्रीयता से परे अपराध का समूल नाश करना सरकार का लक्ष्य: रेड्डी

नयी दिल्ली, एजेंसी। केंद्रीय गृह राज्य मंत्री जी किशन रेड्डी ने आज कहा कि अपराध मानवीयता के खिलाफ है और सरकार का लक्ष्य किसी भी जाति , धर्म और क्षेत्रीयता से उपर उठकर अपराध का समूल नाश करना है। श्री रेड्डी ने यहां राष्ट्रीय अपराध रिकार्ड ब्यूरो द्वारा आयोजित फिंगर प्रिन्ट ब्यूरो निदेशकों के 21 वें अखिल भारतीय सम्मेलन तथा ई साइबर लैब का वर्चुअल रूप से उद्घाटन करने के बाद कहा कि प्रधानमंत्री की अपराध और आतंकवाद के प्रति जीरो टालरेंस की नीति रही है। गृहमंत्री भी 'अपराध मुक्त भारत' के निर्माण में विश्वास रखते हैं और हमारी सरकार का लक्ष्य किसी भी जाति, धर्म और क्षेत्रीयता से परे अपराध का समूल नाश करना है। उन्होंने कहा कि किसी भी तरह का अपराध मानवता की खिलाफ होता है। सरकार पीड़ितों को जल्द से जल्द न्याय दिलाने की दिशा में काम कर रही है और महिलाओं के प्रति अपराध समाप्त करना हमारी सरकार की प्राथमिकता है। गृह राज्य मंत्री ने कहा कि वैसे अपराध पर नियंत्रण राज्य का विषय है किन्तु प्रभावी नियंत्रण एवं पुलिस बलों को आधुनिक बनाने के लिए केंद्र सरकार राज्यों का हरसंभव मार्गदर्शन कर रही है। सरकार ने पुलिस को आधुनिक बनाने की दिशा में बहुत काम किया है और इसके लिए मौजूदा बजट में भी बढ़ोतरी कर 780 करोड़ रुपये का प्रावधान किया। उन्होंने कहा कि अपराध की जांच के मामलों में फिंगरप्रिंट की अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका होती है और यह एक अत्यंत महत्वपूर्ण टूल के रूप में काम करता है। फिंगरप्रिंट एक 'क्राइम सीन' को दूसरे से जोड़ने के साथ यह भी बताता है कि क्या उसमें एक या एक से अधिक व्यक्तियों की भागीदारी रही।

यूपी में 15 अक्तूबर से खुलेंगे सिनेमा, थियेटर व मल्टीप्लेक्स, गाइडलाइंस जारी की गई

लखनऊ, एजेंसी। यूपी में 15 अक्तूबर से 50 प्रतिशत दर्शक क्षमता के साथ सिनेमा, थियेटर व मल्टीप्लेक्स खोले जाएंगे। प्रदेश सरकार ने इसे लेकर गाइडलाइंस जारी कर दी है। मंगलवार को जारी किए गए दिशा-निर्देशों में कंटेनमेंट जोन में आने वाले सिनेमा, थियेटर व मल्टीप्लेक्स को मंजूरी नहीं दी गई है। सामान्य क्षेत्र व प्रतीक्षा क्षेत्र के बाहर कम से कम छह फीट की शारीरिक दूरी के मानक का पालन किया जाएगा। प्रबंधन द्वारा स्पर्श रहित सैनिटाइजर की व्यवस्था की जाएगी। प्रत्येक समय फेस कवर व मास्क का उपयोग, समय-समय पर साबुन से हाथ धोने, सैनिटाइजर उपयोग और खांसते, छींकते समय टिशू, रूमाल या कोहनी का प्रयोग अनिवार्य रूप से किया जाएगा। सार्वजनिक स्थल पर थूकना प्रतिबंधित रहेगा। सभी लोगों द्वारा अपने स्वास्थ्य की स्व-निगरानी की जाएगी और किसी भी बीमारी के संबंध में जल्द से जल्द राज्य और जिला हेल्पलाइन पर सूचना दी जाएगी। आरोग्य सेतु एप के उपयोग के लिए सभी को सलाह दी जाएगी। ऑडिटोरियम के प्रवेश बिंदुओं पर थर्मल स्क्रीनिंग व सैनिटाइजर और पंक्तिबद्ध प्रवेश व निर्गमन के लिए शारीरिक दूरी के मानक के अनुरूप गोलाकार चिंह की व्यवस्था की जाएगी। कोविड लक्षण रहित व्यक्तियों को ही प्रवेश दिया जाएगा। एकल-स्क्रीन सिनेमा में दो शो और मल्टीप्लेक्स में विभिन्न स्क्रीन पर दो शो के बीच पर्याप्त समयांतराल रखा जाएगा। सिनेमाघरों, थियेटरों व मल्टीप्लेक्सों में दर्शकों की कुल क्षमता 50 फीसदी से अधिक नहीं होनी चाहिए। जो सीटें बैठने के लिए निर्धारित न हों, उन्हें बुकिंग (ऑनलाइन/विंडो बुकिंग) के दौरान भी चिह्नित किया जाएगा और इसे सुनिश्चित करने के लिए इसे टेप या फ्लोरोसेंट मार्कर से मार्क कर दिया जाएगा।

तनिष्क के नए विज्ञापन पर फूटा लोगों का गुस्सा कंपनी ने हटाया वीडियो

नई दिल्ली, एजेंसी। त्योहार के सीजन से पहले टाटा ग्रुप का मशहूर वेलरी ब्रांड तनिष्क अपने नए विज्ञापन के चलते विवादों में आ गया है। इस विज्ञापन का वीडियो सामने आते ही लोगों में जमकर गुस्सा देखा गया। इस वीडियो को सोशल मीडिया पर खूब ट्रोल किया गया। दरअसल, तनिष्क के इस विज्ञापन में एक हिंदू लड़की की मुस्लिम परिवार में शादी दिखाई गई है। हालांकि, विवाद बढ़ने के बाद तनिष्क ने वीडियो को यूट्यूब चैनल से हटा दिया है। बता दें कि तनिष्क के इस विज्ञापन को लेकर सोशल मीडिया पर बहस शुरू हो गई। किसी ने इस विज्ञापन की तारीफ की तो किसी ने आलोचना की है।। इसके बाद लोग तनिष्क को बायकॉट करने की मांग भी करने लगे। वहीं, ऐक्ट्रेस रिचा चड्ढा ने इस विज्ञापन को बहुत खूबसूरत बताया तो अभिनेत्री कंगना रणौत ने इसके खिलाफ टिप्पणी की। तनिष्क के इस विज्ञापन में एक हिंदू लड़की को मुस्लिम परिवार की बहू के रूप में दिखाया गया है। हिंदू लड़की की मुस्लिम के घर में शादी हुई है और उसकी गोदभराई यानी बेबी शावर के फंक्शन को दिखाया गया है। इसमें हिंदू रिवाज को ध्यान में रखते हुए मुस्लिम परिवार सभी तरह के रस्मो-रिवाज हिंदू धर्म के हिसाब से करती है। विज्ञापन के अंत में वह गर्भवती महिला अपनी सास से पूछती है, मां ये रस्म तो आपके घर में होती भी नहीं है न इस पर उसकी सास जवाब देती है, पर बिटिया को खुश रखने की रस्म तो हर घर में होती है न वीडियो में हिंदू-मुस्लिम परिवार को एकजुट दिखाने की कोशिश की गई है।

यूपी में दहलाने वाली 2 घटनाएं

चित्रकूट में 14 साल की लड़की से गैंगरेप हुआ, 4 दिन बाद फांसी लगाकर जान दी, गोंडा में सोते वक्त 3 दलित लड़कियों पर एसिड अटैक

नयी दिल्ली, एजेंसी। उत्तर प्रदेश में अब चित्रकूट से गैंगरेप का मामला सामने आया है। घटना के 6वें दिन 14 साल की पीड़ित ने फांसी लगाकर खुदकुशी कर ली। मामला मानिकपुर थाना इलाके के सरैया चौकी के एक गांव का है। लड़की की मौत के बाद पुलिस ने एससी/एसटी एक्ट में रिपोर्ट दर्ज की है। 8 अक्टूबर को लड़की के साथ तीन लोगों ने गैंगरेप किया था। पीड़ित ने घर पर जानकारी दी, जिसके बाद माता-पिता ने सरैया चौकी में शिकायत भी की थी। तब पीड़ित के पिता ने पुलिस को कहा था कि एक-दो दिन में हम आरोपियों के नाम पता कर बता देंगे। उनके खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाए। लेकिन, पुलिस ने न तो रिपोर्ट लिखी और न ही लड़की का मेडिकल कराना जरूरी समझा। इसी बीच, मंगलवार सुबह मां-बाप खेत चले गए और घर पर अकेली लड़की ने फांसी लगाकर खुदकुशी कर ली। सीओ रजनीश यादव का कहना है कि एससी-एसटी एक्ट के तहत रिपोर्ट दर्ज की गई है। अभी गैंगरेप की पुष्टि नहीं हुई। पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट आने के बाद आगे की कार्रवाई करेंगे। वहीं, पिता का कहना है कि उनकी बेटी के साथ गैंगरेप हुआ था। इसी वजह से उसने खुदकुशी कर ली। उधर, गोंडा में तीन दलित बहनों पर एसिड फेंकने की वारदात सामने आई है। घटना सोमवार देर रात की है। वारदात उस समय हुई जब तीनों घर में सोईं थी। घटना में बड़ी बहन का चेहरा झुलस गया, जबकि दो बहनों पर एसिड के छींटे पड़े। वारदात को किसने अंजाम दिया, इस बारे में अभी पता नहीं चल पाया।

कोविड-19 संक्रमण से प्रदेश में रिकवरी का प्रतिशत अब बढ़कर 89.92 प्रतिशत

लखनऊ, संवाददाता। उत्तर प्रदेश के अपर मुख्य सचिव चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अमित मोहन प्रसाद ने आज यहां लोक भवन में प्रेस प्रतिनिधियों को सम्बोधित करते हुए बताया कि कोविड-19 संक्रमण के केसों में विगत 26 दिनों से लगातार कमी आ रही है। प्रदेश में कल एक दिन में कुल 1,51,367 सैम्पल की जांच की गयी। प्रदेश में अब तक कुल 1,21,92,619 सैम्पल की जांच की गयी है। उन्होंने बताया कि प्रदेश में पिछले 24 घंटे में कोरोना से संक्रमित 3033 नये मामले आये हैं। प्रदेश में पिछले 24 घंटे में 3,662 व्यक्ति उपचारित होकर डिस्चार्ज किये गये हैं। अब तक कुल 3,97,570 लोग पूर्णतया उपचारित होकर डिस्चार्ज किये गये। प्रदेश में रिकवरी का प्रतिशत अब बढ़कर 89.92 प्रतिशत है। प्रदेश में 38,038 कोरोना के एक्टिव मामले

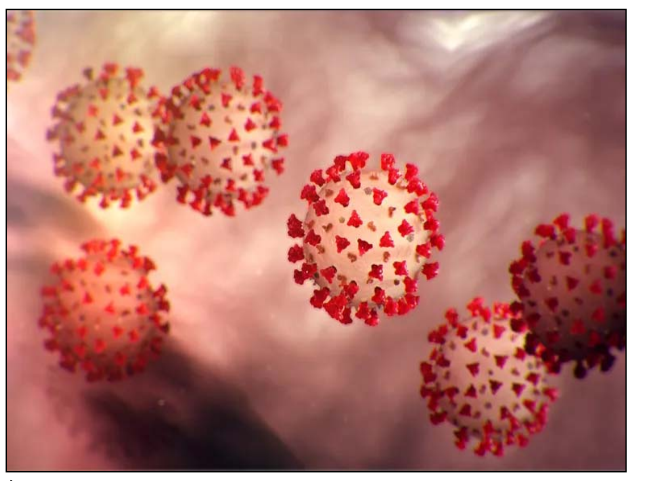

हैं। 17 सितम्बर को 68,000 से अधिक एक्टिव इन्फेक्शन के मामले थे जिसमें वर्तमान में 30,000 से ज्यादा की कमी आयी है। इस प्रकार वर्तमान में एक्टिव मामलों में 44 प्रतिशत से अधिक की कमी आयी है। होम आइसोलेशन में 17,162 लोग हैं। उन्होंने बताया कि अब तक कुल 2,43,951 लोग होम आइसोलेशन की सुविधा प्राप्त करते हुए 2,26,789 लोगों ने अपने होम आइसोलेशन की अवधि पूर्ण कर ली है। श्री प्रसाद ने बताया कि प्रदेश में सर्विलांस टीम के माध्यम से 1,38,720 क्षेत्रों में 4,16,013 टीम दिवस के माध्यम से 2,69,22,819 घरों के 13,29,36,369 जनसंख्या का सर्वेक्षण किया गया है। उन्होंने बताया कि कल 05-05 के 3972 पूल लगाये गये जिनमें 316 में पॉजीटिविटी पायी गयी, जबकि 10-10 के 732 पूल लगाये गये जिनमें 31 में पॉजीटिविटी पायी गयी। उन्होंने कहा कि संक्रमण से बुजुर्गों, गर्भवती महिलाओं एवं बच्चों का विशेष ध्यान रखें।

श्री प्रसाद ने बताया कि जब तक कोविड-19 की निश्चित दवा या वैक्सीन नहीं आती तब तक संक्रमण से बचाव ही सबसे अच्छा उपचार है। उन्होंने कहा कि सावधानी बरत कर हम खुद बच सकते हैं और दूसरों को इस संक्रमण से बचा भी सकते हैं। उन्होंने बताया कि चिकित्सकीय उपचार के लिए ई-संजीवनी पोर्टल शुरू किया गया है। ई-संजीवनी के माध्यम से 2,216 लोगों ने चिकित्सकीय परामर्श लिया। अब तक कुल 1,35,027 लोगों ने ई-संजीवनी पोर्टल पर चिकित्सकीय परामर्श लिया। श्री प्रसाद ने बताया कि संक्रमण की संख्या में कमी आयी है एवं संक्रमण से मृत्यु में भारी कमी आयी है लेकिन संक्रमण समाप्त नहीं है।

ऐसे में सतर्क रहना, सावधान रहना बहुत जरूरी है। ऐसा देखा जा रहा है कि यूरोपीय देशों सहित भारत में भी कुछ प्रान्तों में संक्रमण घटने के बाद पुनः बढ़ रहा है। संक्रमण की 'सेकेण्ड वेव' की स्थिति हमारे प्रदेश में न आए इसके लिए हमें सावधान रहना होगा और संक्रमण से बचाव की सभी सावधानियों को अपनाते हुए स्वयं को तथा अन्य लोगों को भी बचाना है। जिससे प्रदेश में संक्रमण के गिरते स्तर को और नीचे ले जाया जा सके, ताकि प्रदेश में संक्रमण नगण्य हो जाय।

सीएमएस के आठ छात्र क्लैट परीक्षा में चयनित

लखनऊ, संवाददाता। सिटी मोन्टेसरी स्कूल के आठ मेधावी छात्रों ने कॉमन लॉ एडमीशन टेस्ट (क्लैट) में चयनित होकर विद्यालय का नाम गौरवान्वित किया है। क्लैट में चयन के उपरान्त सी.एम.एस. के ये मेधावी छात्रों को बंगलुरु, कोलकाता, नई दिल्ली, लखनऊ, जोधपुर और पटियाला समेत देश भर के 18 राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालयों में अण्डर-ग्रेजुएट लॉ कोर्स एवं पोस्ट ग्रेजुएट लॉ कोर्स में दाखिला ले सकेंगे एवं कानून स्नातक की डिग्री प्राप्त कर सकेंगे। सी.एम.एस. के ये होनहार छात्र आगे चलकर देश ही नहीं अपितु विश्व की न्यायिक व्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान देंगे तथापि प्रभावशाली अन्तर्राष्ट्रीय कानून व्यवस्था के प्रयासों को गति प्रदान करेंगे। सी.एम.एस. के मुख्य जन-सम्पर्क अधिकारी हरि ओम शर्मा ने बताया कि क्लैट परीक्षा में चयनित मेधावी छात्रों में अलीगंज कैम्पस के छात्र आशीष शर्मा, राजेन्द्र नगर कैम्पस की सृष्टि वर्मा, इशिता शर्मा एवं उत्कर्ष गुप्ता, राजाजीपुरम कैम्पस की शीतल, शिवांगी ओझा एवं अतुफा आलम एवं गोमती नगर कैम्पस की छात्रा जिगिशा चौधरी शामिल हैं।

ग्लोबल हैंडवाशिंग दिवस के अवसर पर विभिन्न प्रतियोगिताओं का किया जाएगा आयोजन

लखनऊ, संवाददाता। उत्तर प्रदेश प्राविधिक शिक्षा विभाग आम जनमानस में साबुन से हाथ धोने की एक सामान्य संस्कृति विकसित करने तथा इसके लाभों के बारे में लोगों को बताने और जागरूक करने के लिए इस वर्ष 'ग्लोबल हैंडवाशिंग दिवस' के अवसर पर छात्र- छात्राओं के लिए विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाएगा। विशेष सचिव प्राविधिक शिक्षा सुनील कुमार चौधरी ने यह जानकारी देते हुए बताया कि विभाग द्वारा ग्लोबल हैंडवाशिंग डे के अवसर पर छात्र-छात्राओं के लिए स्लोगन प्रतियोगिता, स्वच्छता में सर्वोत्तम कार्यों का उदाहरण प्रतियोगिता, स्वच्छता एवं ग्लोबल हैंडवाशिंग डे पर लघु निबंध प्रतियोगिता तथा स्वच्छता एवं 'ग्लोबल हैंडवाशिंग डे' पर मीमध्कार्टून का चित्रण प्रतियोगिता का आयोजन किया जाएगा। श्री चौधरी ने बताया कि यू-राइज पोर्टल पर आईटीआई एवं पॉलिटेक्निक के पंजीकृत छात्र-छात्राएं इन प्रतियोगिताओं में भाग ले सकते हैं। उन्होंने बताया कि अलग-अलग प्रतियोगिताओं में विजेताओं को पुरस्कृत भी किया जाएगा। प्रतियोगिता में विजेताओं को प्रथम पुरस्कार के रुप में टेबलेट तथा द्वितीय पुरस्कार के रुप में स्मार्टफोन दिया जाएगा। इस अवसर पर आईटीआई एवं पॉलिटेक्निक के संकाय सदस्य, जिन्होंने यू-राइज पोर्टल पर अपने पाठक विषय में सर्वोत्तम कंटेंट को अपलोड किया है ऐसे प्रत्येक पांच संकाय सदस्यों को विषय वार पुरस्कार दिया जाएगा। यू-राइज पोर्टल को विकसित किए जाने में उत्कृष्ट योगदान देने वाले दो कार्मिकों को पुरस्कार स्वरूप टेबलेट भी दिया जाएगा।

मीरजापुर-विंध्याचल नगर पालिका परिषद को मिले 'नगर निगम' का दर्जाः अनुप्रिया पटेल

लखनऊ, संवाददाता। अपना दल (एस) की राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व केंद्रीय मंत्री व सांसद अनुप्रिया पटेल ने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से मीरजापुर दृविंध्याचल नगर पालिक परिषद को 'नगर निगम' का दर्जा देने की मांग की है। श्रीमती पटेल ने इस बाबत मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को पत्र लिखा है। श्रीमती पटेल ने नगर पालिका के चारों ओर स्थित ग्राम पंचायतों को नगरीय क्षेत्र में शामिल करने की भी मांग की है।अनुप्रिया पटेल ने मुख्यमंत्री को लिखे अपने पत्र में कहा है कि विश्व प्रसिद्ध मां विंध्यवासिनी धाम की पवित्र स्थली मीरजापुर-विंध्याचल नगर एक अति प्राचीन व ऐतिहासिक नगरी है जो विकास की दृष्टि से पिछड़ा है। मीरजापुर-विंध्याचल नगर पालिका परिषद परिक्षेत्र के बाहर चारों ओर स्थित ग्राम पंचायतों का नगरीकरण हो चुका है। जनसंख्या की दृष्टि से भी यह नगर उत्तर प्रदेश के बड़े नगरों में एक है। साथ ही यहां केंद्रीय विद्यालय, मेडिकल कॉलेज आदि निर्माणाधीन हैं।

हिन्दी उर्दू साहित्य अवार्ड कमेटी के 28वें साहित्यिक सम्मेलन का समापन

लखनऊ, संवाददाता। फिराक बीसवीं सदी के महान बुद्धिजीवी शायर थे। खासकर वह अपनी रूमानी शायरी में दिल की नजर से इस दुनिया और दुनियादारी को सामने रखते हैं। गजलगोई में उनका कोई सानी नहीं।

ये कहना मशहूर शायर हसन कमाल का था। वे शायर रघुपति सहाय फिराक गोरखपुरी पर केन्द्रित हिंदी उर्दू साहित्य अवार्ड कमेटी के 28वें साहित्यिक सम्मेलन के पांचवें दिन आज अंतर्राष्ट्रीय कवि सम्मेलन व मुशायरे को बतौर मुख्य अतिथि सम्बोधित कर रहे थे। प्रारम्भ में कमेटी के महामंत्री अतहर नबी ने सभी कवियो-शायरों का स्वागत करते हुए आयोजन के पिछले दिनों की संक्षिप्त रपट प्रस्तुत की। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में फिराक की शायरी पर डा.अनीस अंसारी ने अपनी रचना सुनाने के साथ कहा कि उनकी रुबाइयां हमारी तहजीब को अभिव्यक्त करती हिन्दुस्तानी संस्कृति की आइना हैं। मीर की परम्परा के शायर फिराक की शायरी में अलग रंग-अलग सुगंध का अहसास होता है। लखनऊ के शायर हसन काजमी के संचालन में चले मुशायरे में मुम्बई के हसन कमाल ने सुनाया- उन्हें ये जोम कि फरियाद का चलन न रहा हमें यकीन कि मुंह में जुबान बाकी है खुद अपनी बारी आने पर हसन काजमी बोले- क्या जमाना है कभी यूं भी सजा देता है मेरा दुश्मन मुझे जीने की दुआ देता है कराची की मतीन सैफने मां की ताकत का अहसास इर पंक्तियों में कराया- दिल तो क्या जान हार सकती हूं हर खुशी तुझपे वार सकती हूं पहले डरती थी एक पतंगे से मां हूं अब सांप मार सकती हूं कराची के ही कैसर वजदी ने पढ़ा- मैं के गुफ्तगू से गैर को अपनाता हूं इधर यहां बैठो तुम्हे जादू सिखाता हूं लखनऊ की डा.नसीम निकहत का कहना था मिलना है।

यूपी में किसानों का शोषण कर रही है योगी सरकारः प्रियंका

लखनऊ, संवाददाता। कांग्रेस महासचिव और उत्तर प्रदेश की प्रभारी प्रियंका गांधी वाड्रा ने उत्तर प्रदेश सरकार पर धान में नमी का वास्ता देकर किसानों का शोषण करने का आरोप लगाया है और आंदोलन की चेतावनी दी है। वाड्रा ने मंगलवार को ट्वीट किया '' उप्र के धान किसान बेहद परेशान हैं। धान की खरीद बहुत कम हो रही है। जो थोड़ी सी खरीद हो रही है उसमें रु 1200 से भी कम रेट मिल रहा है। यही धान कांग्रेस सरकार में रु 3,500 तक बिका था। नमी के नाम पर किसानों का शोषण हो रहा है। शायद पहली बार ऐसा है कि धान गेंहू से सस्ता बिक रहा है। उन्होंने कहा कि ऐसे में तो किसान की लागत भी नहीं निकलेगी। किसान अगली फसल कैसे लगाएगा। बिजली बिल में लूट चल ही रही है। मजबूरन किसान कर्ज के जाल में फंसता जाएगा। वाड्रा ने मांग की कि प्रदेश सरकार तुरंत इसमें हस्तक्षेप कर किसान को सही दाम दिलाए वरना कांग्रेस पार्टी आंदोलन करेगी।

एमिटी इंटरनेशनल ने छात्रों एवं शिक्षक के प्रदर्शन को सराहा

लखनऊ, संवाददाता। एमिटी इंटरनेशनल स्कूल ,विराज खंड एमिटीयन हमेशा से ही बड़ा सोचते हैं, और उसे हासिल भी करते हैं, चाहे वह सामान्य विद्यालय के समय के रूप में हो, चाहे वह किसी तकनीकी से सीधे संचार संपर्क में हो, एमिटी इंटरनेशनल विराज खंड के छात्रों ने यह प्रत्यक्ष प्रमाण दें दिया की उनके लिए कोई भी चुनौती बड़ी नही हैं, इस बार विद्यालय में योग्यता चुनौती थी, जिसे गोपालन इन्टर नेशनल स्कूल ने 24 सितम्बर से लेकर 13 अक्टूबर तक पूरे देश में आयोजित किया था, इसमें सारी स्पर्धाए जैसे डंड बैठक,संतुलित विचार,कूदना विचार आदि सम्मिलित किए गए थें, जिसमे सभी प्रशिक्षित छात्र उत्साही क्रीडा शिक्षिका स्वाति सिंह के अंतर्गत उत्साह को प्रमाणित किया गया, और इन छात्रों ने विद्यालय एवं अपने परिवारजनों के लिए ख्यातियाँ लाई, छात्रों एवं शिक्षक के प्रदर्शन को प्रधानाचार्या रचना मिश्रा ने बहुत ही सराहा साथ ही शुभकामनाओं एवं सहयोग को विस्तारित किया।

क्षेत्रीय खाद्य अधिकारी चौक के कार्यालय मे लगी आग से मचा हड़कम्प

एआरओ बोले दस्तावेज व कम्प्यूटर सुरक्षित , कुछ तो छुपा रहे है कर्मचारी

लखनऊ, संवाददाता। क्षेत्रीय खाद्य अधिकारी चौक के चौपटिया स्थित कार्यालय मे सोमवार की देर रात अचानक आग लगने से हड़कम्प मच गया। देर रात कार्यालय मे जिस समय आग लगी उस समय कार्यालय मे ताला लगा हुआ था कार्यालय से धुआं उठता देख मोहल्ले के लोग आ गए और मोहल्ले के लोगो ने मशक्कत करके कार्यालय मे लगी आग को खुद ही बुझा दिया हालाकि कार्यालय मे लगी आग की सूचना के बाद इन्स्पेक्टर सआदतगंज भी मौके पर पहुँचे और फायर ब्रिगेड की गाड़ी को भी मौके पर बुलाया गया लेकिन फायर ब्रिगेड की गाड़ी के मौके पर पहुँचने से पहले ही मोहल्ला वासियो ने आग को बुझा दिया था। क्षेत्रीय खाद्य अधिकारी चौक सतोंष कुमार का कहना है कि आग लगने का स्पष्ट कारण नही पता चला है उन्होने बताया कि ये तो पक्का है कि आग शार्ट सर्किट से नही लगी उन्होने अन्देशा जताया है कि कार्यालय के बाहर किसी बच्चे द्वारा पटाखा दगाए जाने की वजह से आग लगी है। एआरओ संतोष कुमार का कहना है कि आग लगने से कार्यालय मे रक्खा न तो कम्प्यूटर ही जला है और न ही कोई अहम दतावेज ही जले है उन्होने कहा कि मामूली सी आग थी जिसे आसपास के लोगो ने ही बुझा दिया। एआरओ के बयान के मुताबिक भले ही कार्यालय मे लगी आग बहोत मामूली हो लेकिन कार्यालय के अन्य कर्मचारियो की आज की कार्यशैली और भांषा को देखा जाए तो ये एहसास हो रहा है कि कार्यालय मे लगी आग से कोई अहम दस्तावेज जरूर जले है क्यूंकि एआरओ अस्वथ्य होने के कारण कार्यालय मे नही है और कार्यालय की जिम्मेदारी वहां मौजूद अन्य कर्मचारियो की है लेकिन मंगलवार की सुबह से ही कार्यालय के कर्मचारी लोगो से यही कह रहे थे कि आग मे कम्प्यूटर जल गया है अब कोई काम नही होगा। गरीब तबके की जरूरतो से जुड़ा ये स्थान इस लिए भी महत्वपूर्ण है क्यूंकि क्षेत्रीय खाद्य अधिकारी कार्यालय मे वही लोग आते है जिन्हे सस्ते अनाज की दरकार होती है लेकिन मंगलवार को इस कार्यालय मे आने वाले लोोगो से कार्यालय के कर्मचारी यही बहाना बनाते देखे गए कि रात मे आग लगी थी कम्प्यूटर जल गया है बाद मे आना अभी कोई काम नही होगा। जिला आपुर्ति अधिकारी सुनील सिंह का कहना है कि कार्यालय मे मामूली आग लगी थी जिसके सम्बन्ध मे उन्हे बहोत ज्यादा जानकारी नही है।

कोर्ट ने कहा फेसबुक संचालित करना सिविल अधिकार नहीं, वाद खारिज

लखनऊ, संवाददाता। सिविल जज जूनियर डिवीजन लखनऊ इला चौधरी ने आईपीएस अफसर अमिताभ ठाकुर द्वारा अपने फेसबुक अकाउंट यूआरएल को समाप्त किये जाने के खिलाफ दायर वाद खारिज कर दिया है,फेसबुक ने 24 सितम्बर 2020 को अमिताभ के फेसबुक अकाउंट को अस्थायी रूप से बाधित किया था, जिस पर अमिताभ ने अपना पक्ष रखा, लेकिन फेसबुक ने उनके पक्ष को अस्वीकार करते हुए 27 सितम्बर को उनका अकाउंट यह कहते हुए समाप्त कर दिया कि उनके द्वारा सामुदायिक मान्यताओं का पालन नहीं किया गया,अमिताभ ने वाद में कहा था कि फेसबुक ने यह स्पष्ट नहीं किया कि उन्होंने सामुदायिक मान्यताओं का किसी प्रकार उल्लंघन किया. उन्होंने हमेशा फेसबुक के सामुदायिक मान्यताओं का पूरा ध्यान रखा. उन्होंने कहा कि यह निर्णय किन्ही गलत सूचनाओं पर आधारित दिखता है. अतः उन्होंने अपना अकाउंट तत्काल बहाल करने, अकाउंट बाधित करने का कारण बताने तथा एक वाजिब क्षतिपूर्ति दिए जाने की मांग की थी, कोर्ट अपने आदेश में कहा कि वादी के अधिवक्ता द्वारा बहस में ऐसा कोई तर्क या नियम अपने पक्ष में पेश नहीं किया गया जिससे प्रतीत हो कि फेसबुक पर खाता खोलने के बाद आजीवन उसका निर्बाध उपयोग किया जा सकता है अथवा फेसबुक खाता संचालित करने उसका सिविल अधिकार हो. कोर्ट ने कहा कि यह स्पष्ट नहीं किया गया कि वादी के किस सिविल अधिकारे का हनन हुआ जिसके कारण यह सिविल वाद करना पड़ा. अतः कोर्ट ने वाद को पोषणीय नहीं बताते हुए वाद खारिज कर दिया।

धर्म परिवर्तन कर शादी रचाने वाली महिला ने बीजेपी कार्यालय के सामने किया आत्मदाह

लखनऊ, संवाददाता। उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ के बीजेपी कार्यलया में उस समय हड़कंप मच गया जब एक महिला ने अपने आप को गेट के सामने आग लगाकर आत्महत्या का प्रयास करने लगी। कार्यालय की सुरक्षा में तैनात पुलिसकर्मियों ने महिला को किसी तरह बचाया। आनन फानन में महिला को सिविल अस्पताल पहुंचाया गया जहां पर उसकी हालत नाजुक बनी हुई है। फिलहाल पुलिस महिला से पूछताछ कर रही है। जानकारी के मुताबिक मामला हजरतगंज कोतवाली का है। बताया जा रहा है पीड़ित महिला यूपी के महाराजगंज के रहने वाली है। जिसकी शादी अखिलेश तिवारी उर्फ आसिफ से हुई थी। बताया जा रहा है कि शादी के कुछ दिनों बाद दोनों के बीच डाइवोर्स हो गया था। वहीं महिला ने धर्म परिवर्तन करके आसिफ नाम के युवक से शादी रचाई थी। शादी के बाद अखिलेश तिवारी उर्फ आसिफ सऊदी चला गया। महिला के मुताबिक आसिफ के परिजन उसे लगातार प्रताड़ित कर रहे हैं। प्रताडना से परेशान होकर महिला ने बीजेपी कार्यालय के गेट नंबर 2 पर ज्वलनशील पदार्थ डालकर खुद को आग लगा ली। मौके पर पहुंची पुलिस ने महिला को सिविल अस्पताल में भर्ती करा दिया है। जहां पर उसी हालत नाजुक बनी हुई है। वहीं पुलिस लव जिहाद के मामले को ध्यान में रखकर भी मामले की जांच कर रही है।

हिन्दू महासभा तनिष्क के विज्ञापन को लेकर नाराज

धर्मनिरपेक्षता को बढ़ावा दे रहे विज्ञापन पर तत्काल लगे रोकः ऋषि त्रिवेदी

लखनऊ, संवाददाता। अखिल भारत हिन्दू महासभा, उत्तर प्रदेश के अध्यक्ष ऋषि त्रिवेदी ने तत्काल प्रभाव से सामने आये तनिष्क के एक विज्ञापन वीडियो को रोके जाने की मांग की है। पार्टी का मानना है कि इस वीडियो में धर्मनिरपेक्षता की आड़ में लव जेहाद को बढ़ावा दिया जा रहा है। जिसे पार्टी कतई बर्दाश्त नहीं करेगी।

यदि इस विज्ञापन वीडियो को न रोका गया तो पार्टी सड़कों पर उतरने के लिये बाध्य होगी। पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष ऋषि त्रिवेदी ने बताया कि निरन्तर आ रही लव जेहाद की खबरों के बीच कम्पनी ने इस तरह के विज्ञापन को जारी करके हिन्दू भावनाओं को ठेस पहुंचाने का काम किया है। इसलिये कम्पनी को तत्काल प्रभाव से हिन्दू समाज से माफी मांगते हुये इस विज्ञापन को तत्काल राके, अन्यथा हिन्दू महासभा इसके खिलाफ सड़कों पर उतरेगी। पार्टी नेता ने कहा कि यह विज्ञापन ऐसे वक्त जारी किया गया है जब दिल्ली में उन्नीस साल के हिन्दू युवक को उसकी मुस्लिम प्रेमिका के भाईयो ने मुलाकात के बहाने बुलाकर पीट-पीट कर मार डाला, कम्पनी का यह कृत्य जले पर नमक छिड़कने के समान है। उल्लेखनीय है कि जारी इस विज्ञापन वीडियो में जहां एक गर्भवती हिन्दू महिला की मुस्लिम परिवार में गोदभराई की रस्म दिखाई गई है, और साथ ही इस महिला को पारम्परिक साड़ी, बिन्दी और गहने पहने हुये दिखती है वहीं परिवार के अन्य सभी को मुस्लिम के वेशभूषा में दिखाया गया है। ऋषि त्रिवेदी ने लखनऊ में आज एक लड़की द्वारा आत्मदाह करने और दिल्ली में एक उन्नीस वर्षीय लड़के की पीट पीट कर की गयी हत्या की तरह की घटनाओं को देखकर कम्पनी को इस भ्रम से बाहर आना चाहिए कि जिस विज्ञापन के जरिये जो तथाकथित धर्मनिरपेक्षता को दिखा रहे है वह कहीं से भी सही नहीं है।

यूपी उपचुनाव में बसपा ने जारी की 30 स्टार प्रचारकों की सूची

लखनऊ, संवाददाता। यूपी उपचुनाव के लिए बसपा ने अपने 30 स्टार प्रचारकों की सूची जारी की है। बसपा अध्यक्ष मायावती के साथ राष्ट्रीय उपाध्यक्ष सतीष चन्द्र मिश्रा की चुनाव में मुख्य भूमिका होगी। इस सूची में इन्हें पहले, दूसरे नंबर पर रखा गया है। इन बड़े नेताओं के साथ पार्टी ने कुछ नए चेहरों को भी स्टार प्रचारक के रूप में शामिल किया है। मायावती, सतीश चंद्र मिश्रा, आकाश आनंद, मुनकाद अली, डा. अशोक सिद्धार्थ, इंदल राम, अमरजीत गौतम, मदन राम, हरीश चन्द्र गौतम, श्याम सिंह यादव, सुषमा पटेल, उमा शंकर कुशवाहा, महेश चंद्र पांडेय, विनोद बागड़ी, सुभाष चौहान, रघुनाथ चौधरी, विनोद कुमार, वीरेन्द्र सिंह संजय राजभर, राम प्रकाश गुड्डू, ओम प्रकाश, प्रदीप गौतम, पर्णवासी पासवान, सलीम खान, लालजी यादव, दिनेश टंडन, तनवीर हसन, तिलकधारी बिंद, संजय मौर्या के नाम शामिल हैं।

एसबीआई कार्ड ने उपभोक्ताओं के लिये पेश किया फेस्टिव ऑफर्स

लखनऊ, संवाददाता। एसबीआई कार्ड ने आगामी त्योहारी मौसम के चलते उपभोक्ताओं के लिये फेस्टिव ऑफर्स पेश किया है। कंपनी द्वारा मौजूदा समय में बदलते ट्रेंड और उपभोक्ताओं की पसंद को ध्यान में रखकर दो हजार शहरों के लिए 1000 से ज्यादा ऑफर्स विशेष रूप से डिजाइन किए गए हैं। एसबीआई कार्ड अपने उपभोक्ताओं को त्योहारों के दौरान की जाने वाली खरीदारी पर बेहतरीन शॉपिंग अनुभव प्रदान करने के लिए प्रयासरत है। इन ऑफर्स की व्यापक रेंज में 300 से ज्यादा राष्ट्रीय, 700 से ज्यादा रीजनल एवं हाइपरलोकल ऑफर्स शामिल हैं। एसबीआई कार्ड द्वारा फेस्टिव मौके पर खुशियां बिखेरने वासे यह ऑफर्स कई श्रेणियों में दिए जा रहे हैं, जिसमें फैशन और लाइफस्टाइल, इलेक्ट्रॉनिक्स, मोबाइल, ज्वैलरी, डिपार्टमेंटल स्टोर, ट्रैवेल एवं ऑनलाइन मार्केटप्लेस जैसे क्षेत्र शामिल हैं। यह ऑफर्स अमेजन, ब्रैंड फैक्ट्री, क्रोमा, कैरेटलेन,फैबइंडिया, फर्स्ट क्राई, ग्रोफर्स, होमसेंटर, सैमसंग मोबाइल, लॉयड्स, मोर हाइपरमार्केट, मोर सुपरमार्केट, पैंटालून्स और क्लिक्स जैसे प्रमुख ब्रांड्स पर राष्ट्रीय स्तर पर उपलब्ध हैं। ये रणनीतिक साझेदारियां उपभोक्ताओं को सभी प्रासंगिक शॉपिंग कैटेगरीज में लाभ हासिल करने में सक्षम बनाएगी। इन ऑफर्स में आकर्षक कैशबैक्स एवं 10 प्रतिशत तक के इंस्टैंट डिस्काउंट्स शामिल हैं। एसबीआई कार्ड फ्लिपकार्ट के 'द बिग बिलियन डेज' ऑनलाइन शॉपिंग फेस्टिवल के लिए एक्सक्लूसिव क्रेडिट कार्ड पार्टनर भी है। यह फेस्टिवल भारत में सबसे बड़े ऑनलाइन सेल इवेंट्स में से एक है। एसबीआई कार्ड के उपभोक्ता अब घर पर सुरक्षित रहते हुए ऑफर अवधि के दौरान फ्लिपकार्ट पर 10 प्रतिशत के इंस्टैंट डिस्काउंट्स का लाभ उठा सकते हैं।

योगी ने कोविड पॉजिटिव पर सावधानी और सतर्कता बरतने के निर्देश दिए

लखनऊ, संवाददाता। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने विगत 26 दिनों में प्रदेश में कोविड पॉजिटिव के एक्टिव मामलों में आयी 44 प्रतिशत की कमी पर संतोष व्यक्त करते हुए निरन्तर सावधानी और सतर्कता बरतने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने कहा कि अनलॉक की प्रक्रिया को आगे बढ़ाते हुए आने वाले समय में कई अन्य गतिविधियां भी प्रारम्भ हो जाएंगी। इसलिए पब्लिक एड्रेस सिस्टम सहित विभिन्न प्रचार माध्यमों का व्यापक उपयोग करते हुए लोगों को संक्रमण से बचाव और सुरक्षा के सम्बन्ध में निरन्तर जागरूक किया जाए। मुख्यमंत्री आज यहां लोक भवन में आहूत एक उच्चस्तरीय बैठक में अनलॉक व्यवस्था की समीक्षा कर रहे थे। उन्होंने कहा कि कोविड-19 के प्रोटोकॉल के पूर्ण पालन के लिए लोगों को प्रेरित और प्रोत्साहित किया जाए। मुख्यमंत्री ने कोविड-19 की रिकवरी दर की जनपदवार मॉनिटरिंग किए जाने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने कहा कि जनपद लखनऊ में कोविड-19 की रिकवरी दर को और बेहतर किया जाए। इसके लिए एक प्रभावी रणनीति तैयार

कर जनपद में टेस्टिंग कार्य में वृद्धि के साथ-साथ एस0जी0पी0जी0आई0, के0जी0एम0यू0 तथा आर0एम0एल0आई0एम0एस0 में उपचार व्यवस्था को सुदृढ़ बनाया जाए। उन्होंने अपर मुख्य सचिव स्वास्थ्य को जनपद अयोध्या, वाराणसी तथा सीतापुर में भी रिकवरी दर में वृद्धि सुनिश्चित कराने के निर्देश दिए। मुख्यमंत्री ने कहा कि महिलाओं तथा बालिकाओं की सुरक्षा व सम्मान के दृष्टिगत शारदीय नवरात्र से प्रारम्भ किए जाने 'मिशन शक्ति' अभियान में समाज के सभी वर्गों की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित की जाए। व्यापारिक संस्थाओं तथा एम0एस0एम0ई0 इकाइयों में भी महिला सुरक्षा के सम्बन्ध में कार्यक्रम आयोजित किए जाएं। उन्होंने अभियान के तहत सम्पन्न होने वाले कार्यक्रमों का व्यापक प्रचार-प्रसार कराने के निर्देश देते हुए कहा कि इस सम्बन्ध में स्टिकर आदि भी लगवाए जाएं। अभियान के तहत हेल्प लाइन नम्बर भी जारी किया जाए। मुख्यमंत्री ने कहा कि आगामी 16 अक्टूबर, 2020 को बेसिक शिक्षा विभाग के अन्तर्गत 31 हजार से अधिक सहायक अध्यापकों को नियुक्ति पत्र वितरित किए जाएंगे। 17 अक्टूबर, 2020 से महिलाओं तथा बालिकाओं की सुरक्षा व सम्मान के दृष्टिगत 'मिशन शक्ति' व्यापक जागरूकता अभियान का शुभारम्भ होगा।

उन्होंने प्रत्येक जनपद में दोनों तिथियों पर कार्यक्रम आयोजित किए जाने तथा इन कार्यक्रमों में जनपद के प्रभारी मंत्री सहित अन्य जनप्रतिनिधियों को आमंत्रित करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि महिला सुरक्षा कार्यक्रम के सम्बन्ध में सभी सम्बन्धित विभाग अपनी-अपनी कार्ययोजना आज ही प्रस्तुत करें। मुख्यमंत्री ने कहा कि वर्तमान में स्वच्छता तथा सेनिटाइजेशन के सम्बन्ध में संचालित प्रदेश व्यापी विशेष अभियान से जनप्रतिनिधियों को भी जोड़ा जाए। अभियान के तहत ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में स्वच्छता और सेनिटाइजेशन सम्बन्धी कार्य किए जाएं। अभियान की गतिविधियों का व्यापक प्रचार-प्रसार भी कराया जाए। मुख्यमंत्री ने सब्जी और दाल के खुदरा मूल्य को नियंत्रित करने के लिए प्रभावी कार्यवाही सुनिश्चित किए जाने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने कहा कि प्रवर्तन कार्यवाही करते हुए जमाखोरी, मुनाफाखोरी और कालाबाजारी पर प्रभावी अंकुश लगाया जाए।मुख्यमंत्री ने कहा कि आगामी पर्वों के दृष्टिगत भारत सरकार द्वारा अपने कर्मचारियों के लिए अग्रिम धनराशि उपलब्ध कराने का निर्णय लिया गया है। उन्होंने वित्त विभाग को केन्द्र की तर्ज पर प्रदेश में भी इसी प्रकार की योजना तैयार करने के निर्देश दिए हैं। इस अवसर पर चिकित्सा शिक्षा मंत्री सुरेश खन्ना, स्वास्थ्य मंत्री जय प्रताप सिंह, स्वास्थ्य राज्य मंत्री अतुल गर्ग, मुख्य सचिव आर0के0 तिवारी, अवस्थापना एवं औद्योगिक विकास आयुक्त आलोक टण्डन, अपर मुख्य सचिव मुख्यमंत्री एस0पी0 गोयल, अपर मुख्य सचिव महिला कल्याण एवं बाल विकास एस0 राधा चौहान, प्रमुख सचिव पशुपालन भुवनेश कुमार, प्रमुख सचिव मुख्यमंत्री एवं सूचना संजय प्रसाद, राहत आयुक्त संजय गोयल, सचिव मुख्यमंत्री आलोक कुमार, सूचना निदेशक श्री शिशिर सहित अन्य वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे।

उत्तर प्रदेश बना महिलायों की कबरगाहः दारापुरी

लखनऊ, संवाददाता। उत्तर प्रदेश बना महिलायों की कबरगाह÷ यह बात एस आर दारापुरी, राष्ट्रीय प्रवक्ता, आल इंडिया पीपुल्स फ्रंट ने प्रेस को जारी ब्यान में कही है. उन्होंने कहा है कि उत्तर प्रदेश में हाथरस बलात्कार एवं हत्या का मामला अभी चल ही रहा है कि कल रात गोंडा में तीन दलित लड़कियों जिनमें दो नाबालिग हैं, पर तेजाब फेंक दिया गया जोकि बहुत दर्दनाक है. उत्तर प्रदेश में महिलाओं पर निरंतर हो रही हिंसा ने भाजपा के बेटी बचाओ- बेटी पढाओ नारे और महिलाओं पर अपराध में कमी होने के दावे की पोल खोल दी है. इसी प्रकार महाराज गंज की एक महिला ने स्थानीय थाने पर उसकी शिकायत न सुने जाने से दुखी हो कर आज लखनऊ में विधान भवन के सामने आग लगा ली जिससे वह बुरी तरह से जख्मी हो गयी है दरअसल उत्तर प्रदेश में महिलाओं पर हिंसा के अपराध बढ़ने का मुख्य कारण यह है कि प्राय हिंसा करने वालों के विरुद्ध कार्रवाही करने की बजाये उत्तर प्रदेश सरकार विभिन्न कारणों से हिंसा करने वालों के साथ खड़ी दिखाई देती है।

एनडीआरएफ ने आपदा मित्रों को दिया आपदा से संबंधित प्रशिक्षण

संवाददाता गोरखपुर/अब देश में विभिन्न प्रकार की आपदाओं की त्रासदी नियमित हो गई है, वही अब अभिशाप साबित हो रहा है। इन आपदाओं के बाद केंद्र व राज्य सरकारे आपदा प्रबंधन अथक प्रयास कर रही हैं, इस गहन परिस्थिति से निजात पाने के लिए देश में अन्य हितधारकों व ग्रामीणों की सेना तैयार की जा रही है। और सभी को प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

अवगत कराना है की गोरखपुर जिले के 200 आपदा मित्रो को एनडीआरएफ ने विगत साल मैं 14 दिवसीय आपदा प्रबंधन का प्रशिक्षण दिया था। आपदा प्रबंधन के क्षेत्र में आपदा मित्रों को प्रशिक्षण देने का आशय यह था कि आपसी तालमेल को सुदृढ़ बनाना व जन समुदाय को जागरूक करना था, जिससे आने वाले समय में प्रदेश बाढ़, भूकंप व अन्य किसी भी आपदा में बेहतर प्रबंधन कर सके।

इसी क्रम में आज आज दिनांक 13 अक्टूबर 2020 को एनडीआरएफ की एक प्रशिक्षित टीम निरीक्षक डीपी चंद्रा के नेतृत्व में अपने अत्याधुनिक उपकरण सहित राजघाट के राप्ती नदी के तट पर 65आपदा मित्रों व डिजास्टर मैनेजमेंट के 20 विद्यार्थियों को इंप्रोवाइज राफ्ट बनाना घरेलू सामानों से तैरने वाली डिवाइस तैयार करने के बारे में संबंधी टेक्निक, घरेलू सामानों से स्टेचर तैयार करना,

आपदा के दौरान अगर कोई व्यक्ति घायल हो जाता है तो उसको अस्पताल तक पहुंचाने के पहले क्या-क्या प्राथमिक उपचार दिया जा सकता है उसके बारे में गहन जानकारी दिया गया प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद ये आपदा मित्र जिले के विभिन्न स्थानों पर तैनात रहकर डिजास्टर मैनेजमेंट कम्युनिटी का निर्माण करेंगे, जनसामान्य को प्रशिक्षित करेंगे साथ ही विभिन्न संक्रामक बीमारियों से बचने के तरीकों के बारे में भी लोगों को जानकारी देंगे। प्रशिक्षण कार्यक्रम में वाटर रेस्क्यू तकनीक, ड्रम की नाव बनाना, तारपोलिन और घास का बेड़ा, बांस का बेड़ा, केले के तने का नाव बनाना, खाली डिब्बों व खाली बोतलों को तैरने में सहायक बनाना, बाढ़ से पहले की तैयारी, के बारे में जानकारी दी गयी। कार्यक्रम में मुख्य रूप से जिला आपदा विशेषज्ञ गौतम गुप्ता, व एनडीआरएफ के 08 जवान उपस्थित थे। साथ ही साथ एनडीआरएफ के उपनिरीक्षक चंदन कुमार सिंह की अगुवाई में मान वेला गांव में जन जागरूकता अभियान भी चलाया गया इस कार्यक्रम में 50 ग्रामीणों ने भाग लिया , कार्यक्रम के दौरान पार्षद कुदुसअली उपस्थित रहे।

अज्ञात वाहन ने मारी बाइक सवार को टक्कर युवक की मौत

रुद्र प्रताप सिंह मलिहाबाद लखनऊ दिलावर नगर और कुशल खेड़ा के बीच में हुआ हादसा जोकि बीती रात्रि में लगभग 7 और 8 बजे के बीच की है घटना है जिसमे रात के समय युवक को किसी अज्ञात वाहन ने दोपहिया वाहन को मारी टक्कर जिसका न. क्क 32 स्ध्र 2176 है जिसका नाम साहब लाल पिता मुन्नीलाल जिसकी उम्र लगभग 27 वर्ष है जिसका एक बड़ा भाई है जिसका नाम भरत लाल निवासी मुंशी खेड़ा शाहपुर तोंदा हसनगंज उन्नाव का रहने वाला जिसकी अभी दो साल पहले शादी हुई थी जिसका अभी एक महीने पहले उसकी पत्नी शीलू उर्फ रामबेटी ने लड़के को जन्म दिया था जो कि लखनऊ में मजदूरी करके अपना और अपने परिवार का खर्च चलाता था जो कि अपने परिवार में दो भाई और दो बहन थे जिनकी काफी समय पहले शादी हो चुकी है परिजनो का कहना है कि उनका लड़का घर से अपनी ससुराल ग्राम पंचायत ससपन मजरा अटेर जा रहा था तभी रास्ते में हुआ हादसा स्थानीय लोगों को जानकारी मिली तो देखा कि युवक वहीं रोड के किनारे पड़ा था और उसी के पास उसकी दोपहिया बाइक को देख कर लग रहा था कि गाड़ी कुछ दूर जाकर रगड़ कर रुकी है और युवक के सर में और हाथ में काफी गहरी चोट आयी थी जिसकी सूचना तुरंत स्थानीय पुलिस को दी गई मौके पर पहुंचे मलिहाबाद थाना प्रभारी निरीक्षक चिरंजीव मोहन और पुलिस फोर्स की मदद से उसे तुरंत उपचार हेतु नजदीकी सीएससी में भर्ती करवाया जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित किया शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम हेतु भेजा गया मलिहाबाद पुलिस जांच में जुटी ।।

हनुमानगढ़ी परिसर में जयमंगलदास व राजूदास का भी अनशन है शुरू

अयोध्या। आजकल इसी तरह वही दूसरी ओर हनुमानगढ़ी परिसर में ही कांग्रेसी नेता जयमंगलदास भी मंगलवार से अनशन अपना शुरू कर दिए है। उनका मांग है कि गत एक माह में यूपी में कई साधुओं की हत्या हुई है। उनके परिजनों को योगी सरकार जल्द ही एक एक करोड़ रुपये की मदद व सरकारी नौकरी दे। उनका कहना है कि योगी व मोदी सरकार में आजकल सन्त महंत के प्राण सुरक्षित नही है। आये दिन हत्या लूट डकैती व बलात्कार से यूपी कराह रही है। यूपी में जंगलराज आजकल कायम है। जबकि बजरंग दल व एबीवीपी के नेता राजूदास भी गत दिनों हनुमानगढ़ी की दलान में अनशन जारी रखे है। उनकी मांग है कि राजस्थान में साधु की हत्या हुई है। उनके परिजनों को सरकार इंसाफ दिलवाये। अयोध्या नगरी में आजकल तीन सन्त अनसन रत है। इसके चलते प्रशासन चौकन्ना व शतर्क है।

करंट लगने से 18 वर्षीय युवक की मौत

नौतनवा !सोनौली थाना क्षेत्र के श्यामकाट पासी टोला पर आज सुबह 18 वर्षीय युवक की बिजली की चपेट में आ जाने से उसकी मौत हो गई घटना की खबर मिलते ही थाना प्रभारी आशुतोष सिंह मौके पर पहुंच कर आवश्यक कार्यवाही में जुट गए श्यामकाट पासी टोला निवासी उम्र 18 वर्ष अजय पासवान पुत्र महेंद्र पासवान गांव में एक आम के पेड़ के पास खड़ा था अचानक पेड़ में करंट उतरने से अजय पासवान की मौके पर मौत हो गई।

सड़क निर्माण मे घोटाला कि विधायक राधा मोहन अग्रवाल ने खोली भ्रष्टाचार की पोल

गोरखपुर के नगर विधायक डा. राधा मोहन दास अग्रवाल के सामने डूडा के निमार्ण में होने वाली लूट कलई दर कलई परत की तरह खुल गई। मामला रूस्तमपुर का था और वहां की पार्षद श्रीमती कंचनलता सिंह के कहने पर विधायक वहां पहुंचे। यहां हुए भ्रष्टाचार को देखकर नगर विधायक दंग रह गए। नगर निगम में रबराईज्ड इंटरलाकिंग बिछाने के नाम पर हो रही लूट खुलकर सामने आ गई। नियमत : ईंट के नीचे चार ईंच मोटी पत्थर की गिट्टी बिछाई जानी थी। इंटरलाकिंग रबराईज्ड थी ही नहीं और जब हाथ से ही ईंट निकाल कर नगर विधायक ने जांच कराई तो गिट्टी डाली ही नहीं गई थी। एस्टीमेट में दो सौ ट्राली मिट्टी का प्रावधान था, पुरानी नाली एक सिरे से तोडकर फिर से मोरंग बालू से 1:6 के अनुपात से नई नाली बनानी थी और चार ईंच पत्थर की

गिट्टी डालकर इंटरलाकिंग बिछानी थी लेकिन मौके पर पार्षद और नागरिकों ने नगर विधायक को दिखाया कि मिट्टी नहीं डाली गई है। खराब नालियां तोड़कर बनाने की जगह उसी नाली के ऊपर एक नयी ईंट बिछा दी गई थी। मोरंग बालू की जगह 1:12 के मसाले से सफेद बालू प्रयोग किया गया था और गिट्टी बमुश्किल एक ईंच ही डाली गई थी। शिकायत के बाद भी नहीं हुई जांच पार्षद प्रतिनिधि ने बताया कि उन्होंने शिकायत की तो उल्टे उनके साथ बाहर से आये लोगों ने गलत व्यवहार किया और धनादोहन का आरोप लगा दिया। पीडब्ल्यूडी के अधिशासी अभियंता, अवर अभियंता तथा सिटी मजिस्ट्रेट को जांच सौपी गई। जांच भी नही हुई और निर्माण भी रुकवा दिया गया। नगर निगम के अवर अभियंता नर्वदेश्वर पाण्डेय ने नगर विधायक को बताया कि उन्होंने अभी तक कोई भुगतान नहीं किया है। नगर विधायक ने परियोजना अधिकारी डूडा विकास सिंह तथा पीडब्ल्यूडी के अधिशासी अभियंता एसपी भारती से बात की और उन्हें चेतावनी दी कि इस हीलाहवाली को वे कतई बर्दाश्त नहीं करेगें। उन्होंने दोनों अधिकारियों को तीन दिन के भीतर निष्पक्ष रिपोर्ट देने के लिए कहा है। नगर विधायक ने आठ महीने में अभी तक मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का शिलान्यास का पत्थर अभी तक न लगाएं जाने पर अभियंता की जमकर क्लास लगाई। पार्षद कंचनलता सिंह ने नगर विधायक को अपनी एक लिखित शिकायत दी है। शिकायत में घटिया निर्माण, जांच में देरी तथा ठेकेदार के लोगों के द्वारा दुर्व्यवहार का उल्लेख है। नगर विधायक ने चिठ्ठी को मुख्यमंत्री को कार्यवाही के लिए अग्रसारित किया है।

ग्राहकों से एक साल की फ़ीस लेकर पिछले सात महीनों से बंद पड़ा स्नैप फ़िटनेस ज़िम

सालभर तक की एडवांस फ़ीस जमा करा चुके ग्राहक वर्कआउट के लिए परेशान

लखनऊ। लॉक डाउन के दौरान बंद हुआ ज़िम अबतक खुल नही सका है। ग्राहकों ने ज़िम संचालक पर पैसा हड़पने का आरोप लगाया है। आशियाना थानाक्षेत्र के सेक्टर आई स्थित स्नैप फ़िटनेस ज़िम में पिछले सात महीनों से ताला बंद होने से वर्कआउट करने वाले काफ़ी संख्या में लोग परेशान है। ज़िम के कर्मचारियों से संतोषजनक जवाब न मिलने पर ग्राहकों ने प्रबंधन पर पैसा हड़पने का आरोप लगाया है। जिम में वर्कआउट करने वाले स्थानीय निवासी विलियम ने प्रबंधन पर एक साल की फ़ीस हड़पने का आरोप लगाया है। आरोप के मुताबिक़ प्रति ग्राहकों से 11 हज़ार रुपये सालाना जनवरी में ही जमा करवाने के बावजूद भी ज़िम प्रबंधन ने सात महीने से ज़िम को बंद कर रखा है। ज़िम अचानक से बंद होने पर बतौर वर्कआउट के लिए पूरे साल की फ़ीस जमा करा चुके ग्राहक अब वर्कआउट के लिए परेशान देखे जा रहे है।

टालमटोली में जुटा ज़िम प्रबंधन

ग्राहकों से पूरे साल की फ़ीस लेकर स्नैप फ़िटनेश ज़िम में पिछले सात महीनो से ताला बंदी के मामलें में जिम प्रबंधन ग्राहकों से लगातार टालमटोली कर रहा है। ग्राहकों के मुताबिक ज़िम के केयरटेकर से लेकर अकाउंटेंट तक से ज़िम कब खोला जायेगा इस बारे में कई बार बात करने पर उन्हें कोई स्पष्ट जवाब नही मिला है।

क्या बोले ज़िम्मेदार

जिम मार्च से ही बंद है, अभी होल्ड पर ही है। ज़िम के बारे में अभी कुछ पता नही है।
नील अस्थाना फ्रंट डेस्क , स्नैप फ़िटनेस ज़िम

कोरोना के चलते ज़िम बंद था। ज़िम में मरम्मत का कार्य चल रहा है। छत से पानी टपक रहा है। एसी भी खराब है। ग्राहकों का रुपया लौटाना संभव नही है, प्रबंधन के पास रूपये नही है। सरकार से भी कोई मदद नही मिलती। ज़िम खोलने की कोशिश चल रही है। अभी एक- दो महीने और लग सकते है। **मुक्तादिर अकाउंटेंट, स्नैप फ़िटनेस ज़िम**

480 अदद नशीली गोली व एक असलहा मय कारतूस दो गिरफ्तार

हरैया। मंगलवार को महुघाट चौराहे के पास अमारी बाजार जाने वाली सड़क के पास से अभियुक्त राहुल पाठक पुत्र तारकनाथ पाठक सा0 डुहवा मिश्र थाना छावनी जनपद बस्ती के कब्जे से 480 अदद नशीली गोली बरामद कर थाना हरैया पर मु0अ0स0 260/2020 धारा 8/22 NDPS Act तथा अभियुक्त नीरज पाण्डेय पुत्र राम प्रकाश पाण्डेय सां0 बड़हर कला थाना हरैया जनपद बस्ती के कब्जे से एक अदद तमंचा मय एक अदद जिंदा कारतूस बरामद कर थाना हरैया पर मु0अ0स0 261/2020 धारा 3/25 Arms Act पंजीकृत किया गया। गिरफ्तार करने वाली पुलिस टीम में उ0नि0 सुरेश यादव,उ0नि0 सुदीप कुमार यादव,का0 जितेन्द्र कुमार सिंह, का0 सौरभ सिंह थाना हरैया जनपद बस्ती आदि शामिल रहे।

छह सूत्री मांगों के लिए हिंदी पत्रकार एसोसिएशन द्वारा जिलाधिकारी को ज्ञापन सौंपा

रुद्र प्रताप सिंह। राजधानी लखनऊ में जिला कलेक्ट्रेट पर पत्रकारों ने किया धरना प्रदर्शन पत्रकारों पर हो रहे आये दिन जानलेवा हमलों के खिलाफ लखनऊ में जिलाधिकारी को हिंदी पत्रकार एसोशिएशन के तत्वाधान में ज्ञापन सौंपा गया जिसमें पत्रकारों की सुरक्षा के लिए 6 सूत्रीय मांगों को लेकर धरना प्रदर्शन किया पत्रकार सजग प्रहरी की भान समाज को जागरुक करते हुए अपनी कलम की ताकत से देश की एकता और अखंडता को बनाए रखने के लिए संघर्षों से जूझते रहते हैं महा की भूमिका का निर्वहन करता है जिसके लिए अपने प्राणों की आहुति भी देता है इंद्र पत्रकार द्वारा जिलाधिकारी कार्यालय लखनऊ में आयोजित प्रदर्शन के दौरान श्री केशव पांडे एडवोकेट अध्यक्ष उत्तर प्रदेश ने और उपाध्यक्ष श्री राजीव मिश्रा ने पत्रकारों को संबोधित करते हुए कहा कि पत्रकार सजक प्रहरी भर्ती जनमानस एवं शासन प्रशासन के मध्य अपनी लेखनी तो सामाजिक बुराइयां

समस्याओं का समाधान करने का प्रयास लगातार करते हैं जिन चार स्तंभों पर भारत वर्ष खड़ा है वह चौथा स्तंभ प्रेस ही है जिसको असामाजिक तत्व गिराने का षडयंत्र कर रहे हैं ऐसे तत्वों को एकता के साथ जवाब देने का समय आ गया है पत्रकार किसको कहते हैं और कैसा होता है पत्रकार पत्रकार होता है स्वयं भूखा रहकर खबर तलाशता है की कहीं कोई भूखा तो नहीं सो रहा है पत्रकार वह होता है जो स्वयं प्यासा रहकर खबर तलाशता है कि कहीं कोई कुआं तो नहीं सूख गया पत्रकार वह होता है जो स्वयं,धूप में तप कर खबर तलाशता है कि कहीं कोई महिला या बच्ची के साथ हिंसा तो नहीं हुई या उन्हें मार तो नहीं दिया गया पत्रकार वह है जो स्वयं सर्दी में ठिठुर कर खबर तलाशता हैं कि कही कोई नंगा तन तो नही कॉप रहा हैं पत्रकार वह होता हैं जो बरसात में निकल कर खबर तलाशता हैं कि कही कोई छत तो नही टपक रही हैं पत्रकार वह है जो अपनी जान जोखिम में डालकर भी दूसरों तक खबर पहुंचाता है खुद को अंधेरे में रखकर भी दूसरों तक रोशनी पहुंचाता है पत्रकार उसको कहते हैं ना कलम बिकती हैं ना क़लमकार बिकता हैं ।महंगाई के दौर में न कोई पत्रकार बिकता हैं लिखते लिखते हाथ लहू लुहान हो जाते है तब चंद पैसों में अखबार बिकता है।

पत्रकारों की 6 सूत्रीय मांगे

1. पत्रकरो शिकायतें संज्ञान में लिया जाए
2. पत्रकार एवं उनके परिवार को सुरक्षा प्रदान की जाए
3. पत्रकारों को स्वास्थ्य सुविधा मुहैया कराई जाए
4. पत्रकारो को सशक्त लाइसेंस की प्राथमिकता पर दिया जाए
5. पत्रकारों का राष्ट्रीय राजमार्ग पर टोल टैक्स माफ किया जाए
6. पत्रकारों की पेंशन सुनिश्चित की जाए ।।

बृजेश सिंह विनीत मिश्रा ज्ञान प्रकाश मौर्य संजीव त्रिपाठी प्रशांत शुक्ला वसी मोहम्मद शंभू सिंह अशोक मिश्रा प्रियांशु दीक्षित आनंद मोहन आशीष कुमार नागेंद्र कुमार कुमोद अवस्थी मानू तथा अन्य पत्रकार बन्धु सम्मिलित रहे।

पीस कमेटी के माध्यम से जारी हुआ त्योहारो की गाइड लाइन 5 फीट से छोटी मूर्तियों को करें स्थापित- थाना प्रभारी चिलुआताल

चिलुआताल गोरखपुर /आगामी त्योहारो के मद्दे नजर शासन की मंशा के अनुरूप जो गाइड लाइन जारी हुई है उसको धरातल पर अमली जामा पहनाने के लिये मंगलवार को छः बजे चिलुआताल थाने पर पीस कमेटी का आयोजन कर सभी आगन्तुको को अवगत कराया गया। आये हुये क्षेत्र के सभी सम्मानित लोगो को बताया गया कि मूर्ति स्थापना , मेला व रामलीला के लिए एसडीएम महोदय से लेना होगा अनुमति बिना अनुमति के किये गये आयोजनो के खिलाफ होगी बड़ी कार्रवाई नवरात्र दुर्गा पूजा को सकुशल संपन्न कराने के लिए चिलुआताल थाना प्रभारी नीरज राय ने धर्म गुरुओं और सम्मानित व्यक्तियों के साथ थाना परिसर में बैठक कर त्योहारों के दौरान कोरोना महामारी को रोकने के लिये दिए गए गाइडलाइंस के अनुसार ही अपने त्योहारों को आयोजित करें त्योहारों के आयोजनों के लिए आयोजक पहले से ही स्थलों को चिन्हित कर ले स्थलों पर थर्मल स्कैनिंग सेनेटाइज़ेशन और शारीरिक दूरी बनाये रखने की व्यवस्था सुनीश्चित करें कार्यक्रम स्थलों पर शारीरिक दुरी बनाने के लिए वृत्त(गोला) बनाये जाये। प्रवेश द्वार पर ही थर्मल स्कैनिंग और सेनेटाइज़ेशन की व्यवस्था हो केवल उन्ही स्टाफ और लोगो को प्रवेश मिले जिनमे किसी भी प्रकार के कोविड लक्षण न मिले लक्षण मिलने पर शिष्टता के साथ प्रवेश लेने से मना किया जाए । सभी स्टाफ और दर्शको को फेस मास्क का उपयोग अनिवार्य होगा और कार्यक्रम स्थल के अंदर और बाहर लोगो को शारीरिक दुरी के मानक का पालन करना होगा कार्यक्रम स्थलों पर आने जाने के लिए अलग अलग रास्ते बनाये जाये और हो सके तो एक से अधिक रास्ते सुनिश्चित किये जाए पांच फीट से ज्यादे ऊची मूर्ति स्थापित न किया जाए छोटे वाहनों पर मूर्ति को रखकर 5 लोगों के साथ ही मूर्ति विसर्जित करें मूर्ति स्थलों पर सीसी कैमरे लगाए जाएं डीजे नहीं बजाया जाएगा लाउडस्पीकर 70 डीसीडब्ल्यू नार्मल साउंड सिस्टम बज सकता है सार्वजनिक स्थानों पर मूर्तियां न रखी जाएं केवल मंदिरों व घरों में मूर्तियां रखी जाएं रोड के किनारे मूर्ति नहीं रखी जाएगी।

उपजिलाधिकारी ने किया अभिभावक संघ और प्रबंधको के साथ बैठक, फीस माफी को लेकर निकला निष्कर्ष

नौतनवां। कोविड-19 महामारी के दृष्टिगत मार्च के प्रथम पखवारे से ही विद्यालयों को बंद करने के निर्देश सरकार ने जारी कर दिए थे। कोरोना मामलों में इजाफा देखते हुए न्यायपालिका ने विद्यालयों को निर्देशित किया था कि स्कूलों को बंद रखने के साथ ही और पाल्यो के भविष्य को देखते हुए ऑनलाइन कक्षाएं संचालित करें।

उल्लेखनीय है कि उत्तर प्रदेश के महाराजगंज जनपद के नौतनवा नगर पालिका में फीस माफी को लेकर कथित अभिभावक संघ ने अपना आवाज बुलंद करना शुरू कर दिया। नो क्लास नो फीस के तर्ज पर कुछ लोगों का एक समूह इकट्ठा हुआ और देखते ही देखते रात भर में नगर के लगभग अधिकतम घरों की दीवारों पर कुछ लोगो ने नो क्लास नो फीस के पर्चे चिपका दिए। आपको बता दे कि फीस माफी को लेकर पहले ही सरकार ने अपना

रुख स्पष्ट कर दिया था। गौरतलब है कि कथित अभिभावक संघ नौतनवा ने बीते 9 अक्टूबर को उपजिलाधिकारी प्रमोद कुमार को फीस माफी को लेकर ज्ञापन सौंपा था। इसको संज्ञान में लेते हुए एसडीएम ने नौतनवा के कुछ प्रबंधकों व कथित अभिभावक संघ की बैठक किया कोरोना महामारी के मद्देनजर सरकार ने लॉकडाउन घोषित किया था जिसके कारण लोग आर्थिक तंगी से जूझ रहे हैं ऐसे में बिना क्लास के अभिभावक फीस देने में पूर्णता असमर्थ हैं। अभिभावक संघ नौतनवा फीस माफी को लेकर हाईकोर्ट का दरवाजा भी खटखटा चुका है। वहीं उपजिलाधिकारी प्रमोद कुमार ने बताया कि प्रबंधकों और फीस माफी की ज्ञापन लेकर आए अभिभावक संघ को एक मंच देने के उद्देश्य से बैठक बुलाई गई थी जिसमें से वसीम खान बंटी पांडे विंध्याचल अग्रहरी राजा ठाकुर सुनील त्रिपाठी ईश्वर जयसवाल संतोष जयसवाल व अन्य लोग मौजूद रहे ताकि प्रत्यक्ष रूप से दोनों पक्ष बैठकर कोई निष्कर्ष निकाल लें। हालांकि बैठक में दोनों पक्षो ने अपने-अपने बातें रखे हैं। निर्देशों का ही पालन करेंगे।

संदिग्ध परिस्थितियों में युवक की मौत हत्या की आशंका

गोरखपुर/बेलघाट थाना क्षेत्र के अंतर्गत ग्राम सभा एकौना खुर्द निवासी 14 वर्षीय शैलेश पुत्र बिसेसर की लाश सिक्स लेन पर बन रहे अंडर पास के गड्ढे में मिली है। शव को देखने से लगता है कि युवक की हत्या कहीं और करके गड्ढे में डाल दी गई हो। मिली जानकारी के मुताबिक शैलेश पांच भाई-बहनों में सबसे छोटा था, मृतक के पिता बन रहे सिक्स लेन के किनारे झोपड़ी डालकर दुकान कर रखे हैं पिता विशेसर का कहना है कि 11 बजे तक हम लोग जाग रहे थे। तब तक वह घर पर ही था उसके बाद घर से थोड़ी दूर पर बन रहे सिक्स लेन के किनारे अपनी दुकान पर चले गए उसके बाद शैलेश घर से कब बाहर गया पता नहीं चल सका जबकि दुकान से 50 मीटर की दूरी पर बन रहे अंडरपास के गड्ढे के पानी में सुबह लाश मिली कुछ बच्चे सुबह सवेरे शौच के लिए सिक्स लेन की तरफ गए थे। बच्चों ने ही लाश को अंडर पास के गड्ढे में देखा और उसके बाद शोर मचाया जिस पर ग्रामीणों की भीड़ लग गई और ग्रामीणों ने इसकी सूचना पुलिस को दी तब मौके पर जाकर के पुलिस ने शव को कब्जे में लिया डाग स्क्वायड की टीम भी मौके पर पहुंची थी। इस संबंध में पुलिस अधीक्षक ग्रामीण विपुल कुमार श्रीवास्तव ने बताया कि प्रथम दृष्टया हत्या लग रही है लेकिन हत्या किन कारणों से हुई है ज्ञात नहीं हो सका है जिसकी छानबीन की जा रही है शीघ्र ही मामले का पर्दाफाश किया जाएगा परिजन की तहरीर मिलने के बाद आगे की कार्यवाही की जाएगी।

पुलिस की जवाबदेही सुनिश्चित हो

अमेरिका के मिनीयापॉलिस शहर में अश्वेत नागरिक जॉर्ज फ्लॉयड की मई में जब पुलिस ज्यादती से मौत हुई, तो पूरे देश में कोहराम मच गया. एक बेहद मामूली अपराध के संदेह में फ्लॉयड की गिरफ्तारी के दौरान एक पुलिस अधिकारी ने उनकी गर्दन पर अपना घुटना गाड़ दिया और दो अन्य पुलिसकर्मी उनके बेहोश शरीर को दबाये रहे. अचेत होने से पहले फ्लॉयड कहते रहे 'आइ कांट ब्रीद' (मैं सांस नहीं ले पा रहा हूं), मगर पुलिस ने उनकी नहीं सुनी और उन्होंने वहीं दम तोड़ दिया. घटना की रिकॉर्डिंग सिक्योरिटी कैमरे पर दर्ज हो गयी थी. एक प्रत्यक्षदर्शी लड़की ने भी सेल फोन पर वीडियो बनाकर शेयर कर दिया, जो मिनटों में वायरल हो गया. आज अमेरिका की दीवारों और सड़कों पर एक ही नारा है 'आइ कांट ब्रीद', जो सामाजिक न्याय के संघर्ष का पर्याय बन गया है. घटना के बाद चारों पुलिस अधिकारियों को तुरंत हत्या का अभियुक्त बनाकर पद मुक्त कर किया गया और अगले कुछ दिनों में उनके अपराध को गंभीर हत्या की श्रेणी में तब्दील कर दिया गया. मगर, फिर भी इस प्रकरण ने पूरे देश को विचलित कर दिया. मृतक के सम्मान और संवेदना में मिसीसिपी नदी किनारे बसे मिनीयापॉलिस शहर के रास्तों को जनता ने फूलों और गुलदस्तों से पाट दिया. जन-सैलाब सड़कों पर उतर आया और अटलांटिक तट से लेकर प्रशांत तट तक फैले अमेरिका में प्रदर्शनों का सिलसिला फूट पड़ा. कई जगहों पर लूटपाट और आगजनी की घटनाएं भी हुईं. प्रदर्शन जिस पुलिस के खिलाफ थे, उसी ने लोगों पर डंडे बरसाये और अश्रु गैस से लेकर प्लास्टिक बुलेट, और स्टन ग्रेनेड से लेकर टेसर गन जैसे भीड़ को निष्क्रिय बनानेवाले हथियारों का खुलकर प्रयोग किया. संयोग से, मैं उस समय अमेरिका की राजधानी वाशिंगटन डीसी में एक फेलोशिप पर था और भारत वापस आने की तैयारी में जुटा था. मेरे लिए सबसे आश्चर्य की बात ये थी कि पुलिस महिलाओं, बूढ़ों और यहां तक कि पत्रकारों को भी नहीं बक्श रही थी. कमेटी टू प्रोटेक्ट जर्नलिस्ट्स (सीपीजे) ने सिर्फ पहले कुछ दिनों में ही 125 ऐसी घटनाओं की लिस्ट जारी की, जिसमें पत्रकारों के साथ हिंसा, उत्पीड़न और धरपकड़ की गयी. मेरे लिए दूसरी चौंकानेवाली बात थी- अमेरिका में पुलिस का मिलिट्रीकरण, जो भुलाये नहीं भूलता. व्हाइट हाउस के आस-पास जहां मैं रोज शाम को सैर करने निकलता था, वहां का खुशनुमा माहौल युद्ध क्षेत्र में बदल चुका था. सामने बख्तरबंद गाड़ियां, चारों तरफ भारी-भरकम हथियारों से लैस बुलेट प्रूफ जैकेट में पुलिसकर्मी और आसमान पर काफी नीचे उड़ान भरते पुलिस के हेलिकॉप्टर. दमन की इस काली छाया के तले प्रदर्शनकारी भी खूब डटे रहे और नारे लगाते रहे 'आइ कांट ब्रीद' और न्याय नहीं, तो शांति नहीं ('नो जस्टिस नो पीस'). यही आलम लगभग हर शहर में था और लड़ाई पुलिस के खिलाफ नहीं, बल्कि सामाजिक न्याय के लिए थी. प्रदर्शनकारी जिस समस्या को बेनकाब कर रहे थे, वह स्वतः ही अपने विकराल रूप में प्रकट थी. जो पुलिस व्यवस्था काले-गोरों के बीच भेदभाव करती है, वह अश्वेत लोगों पर हो रहे तमाम अत्याचारों का प्रतीक बन गयी थी. मैपिंग पुलिस वाइलेंस (एमपीवी) नामक स्वयंसेवी संस्था की एक रिपोर्ट के अनुसार, पुलिस के हाथों मरनेवाले अश्वेत नागरिक (24 प्रतिशत) अपनी जनसंख्या (13 प्रतिशत) से लगभग दोगुने से कुछ ही कम हैं. बीबीसी की एक रिपोर्ट के अनुसार, पुलिस के हाथों मरनेवाले श्वेत लोग (36 प्रतिशत) अपनी जनसंख्या (60 प्रतिशत) के आधे के आस-पास है. अश्वेतों के साथ पुलिस के अन्याय पर अमेरिका में दर्जनों रिपोर्टें हैं, जिन पर सही अमल अभी तक नहीं हुआ है. मगर, इस आंदोलन के दौरान भी पुलिस भीड़ के साथ वही कर रही थी, जो वह हमेशा से करती आयी है, यानी अत्यधिक बल प्रयोग. अमेरिका में पिछले कुछ दशकों में, पुलिस का भारी मिलिट्रीकरण हुआ है और 'क्राउड कंट्रोल' के कानूनों को बेहद सख्त बनाया गया है. जॉर्ज फ्लॉयड की मौत के पहले और बाद भी ऐसी बहुत घटनाएं हुई हैं और हो रही हैं. मगर, यह कहा जा सकता है कि प्रतिरोध के साथ-साथ परिवर्तन की प्रक्रिया भी शुरू हो चुकी है. चाहे उसकी गति कितनी भी मंद क्यों न हो. वहां पुलिस विकेंद्रीयकृत संस्था है और मुख्यतः स्थानीय निकायों के अधीन है, जिससे स्थानीय जन प्रतिनिधि भी स्थितियों में सुधार ला सकते हैं. राष्ट्रपति चुनावों में भी पुलिस के सुधार और सामाजिक न्याय बहुत बड़े मुद्दे बने हैं. अंततः क्या होता है, वह तो समय के साथ ही पता चलेगा, मगर इस पूरे प्रकरण में कुछ ऐसी समानताएं और विषमताएं सामने आयीं, जिनका जिक्र करना मैं आवश्यक समझता हूं. पहली, ये कि सामाजिक अन्याय के खिलाफ महिला, पुरुष, काले, गोरे, एशियाई, हिस्पानिक, नौजवान, बूढ़े इत्यादि सभी सड़कों पर उतर आये. कई जुलूसों में तो अश्वेत लोग अल्पसंख्या में नजर आ रहे थे. भारत में अक्सर देखा गया है कि जब अनुसूचित जाति या जनजाति के लोगों पर या अल्पसंख्यकों पर पुलिस की ज्यादतियां होती हैं, तो अन्य वर्गों के नागरिक आवाज उठाने में कोताही करते हैं, जिससे सामाजिक न्याय की लड़ाई जाति की लड़ाई बन जाती है. दूसरी, ये कि मुख्यधारा के लगभग सारे अमेरिकी मीडिया ने अन्याय के खिलाफ जंग में अश्वेत और पीड़ितों का साथ दिया और खबरों के साथ पक्षपात नहीं किया.सत्ता पक्ष के रिपब्लिकन मीडिया ने भी पुलिस की भीड़ पर कार्रवाई का छुटपुट समर्थन तो किया, मगर अश्वेतों पर हुई पुलिस ज्यादतियों का पक्ष नहीं लिया. तीसरी बात, ये कि रंगभेद के समर्थकों को मीडिया ने लगभग शून्य कवरेज दिया. चौथी और अंतिम बात, अमेरिका की घटनाओं का एक सबक है कि पुलिस सुधारों का मतलब यह नहीं है कि पुलिस को ज्यादा हथियार देकर उसकी मारक शक्ति बढ़ायी जाए या उसका मिलिट्रीकरण किया जाए, बल्कि ये है कि उसे जनता के प्रति जवाबदेह बनाया जाए, जिसकी आवश्यकता दुनिया के सबसे पुराने लोकतंत्र अमेरिका और सबसे बड़े लोकतंत्र भारत दोनों को है।

सम्पादकीय

क्वैड कूटनीति प्रतीकात्मक तस्वीर

पिछले दिनों टोक्यो में चार देशों- अमेरिका, जापान, ऑस्ट्रेलिया और भारत- के समूह चतुष्क (क्वैड) की बैठक हुई, जो विदेशमंत्री स्तर की दूसरी मुलाकात थी. इसमें भारत के विदेश मंत्री एस जयशंकर ने चीन का नाम लिये बिना एक नियम संगत विश्व व्यवस्था बनाने की बात कह., वहीं अमेरिका के विदेश सचिव माइक पॉम्पियो ने चीन को विश्व शांति का दुश्मन बताते हुए अन्य देशों के साथ मिल कर काम करने की वकालत की. ऑस्ट्रेलिया कोरोना महामारी पर अपनी टिप्पणी की वजह से चीन के तीखे तेवर का सामना कई महीने से कर रहा है. जापान की सीधी मुठभेड़ चीन के साथ साउथ चाइना सी में है. अब मुश्किल यह है कि इस मंच को कारगर कैसे बनाया जाए? चीन-भारत संबंध तमाम विरोधाभासों के बावजूद व्यापार के क्षेत्र में निरंतर मजबूती से बढ़ रहा था, लेकिन चीन की नीयत में खोट थी. चीन समझता था कि भारत का आर्थिक ढांचा महामारी में बिगड़ चुका है, इसलिए वह चीनी अतिक्रमण को झेल नहीं पायेगा, पर चीन की चाल उलटी पड़ गयी. आत्मनिर्भर भारत की प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की पहल से चीन का आर्थिक अंकुश नाकाम हो चुका है. यह सच है कि भारत अब भी चीन के व्यापारिक भार से दबा हुआ है, लेकिन अब वैकल्पिक ढांचा तैयार होता दिख रहा है. भारत सौर ऊर्जा के लिए सोलर पैनल और विंड पैनल चीन से आयात करता था, लेकिन अब नहीं. अन्य देशों के पास भी साधन हैं और भारत उनकी मदद से अपने निर्माण ढांचे को मजबूत बनाने में जुटा हुआ है. उम्मीद है कि आगामी दो दशकों में आत्मनिर्भर भारत का संकल्प पूरी तरह से साकार हो चुका होगा. इस मुहिम में क्वैड के देश काफी मददगार हो सकते हैं. जापान के पास ग्रीन टेक्नोलॉजी का भंडार है. भारत के उत्तर-पूर्वी राज्यों में जापान कई महत्वपूर्ण योजनाओं पर काम कर रहा है. क्वैड में परोक्ष रूप से पूर्वी एशिया और यूरोप के तमाम धनी देश अमेरिका के सहयोगी देश हैं तथा उनमें से अधिकतर देशों के साथ भारत के अच्छे संबंध हैं. क्वैड में अगर ग्रीन एनर्जी को लेकर समझ बनती है, तो चीन की बेल्ट-रोड परियोजना को रोका जा सकता है. तकरीबन 65 देशों में जहां चीन अपने आर्थिक विस्तार का तंबू बांध रहा है, उनमें से 25 देशों में विकास की धारा कोयला और ईंधन से चल रही है. इनमें 20 देश ऐसे हैं, जो गरीबी और मौसम परिवर्तन से परेशान हैं. वर्ष 2015 के पेरिस जलवायु सम्मेलन में कहा गया था कि धनी देश, हर साल करीब 100 मिलियन डॉलर की मदद, ग्रीन एनर्जी के लिए गरीब देशों को देंगे. भारत पहले से ही अपनी सार्थक कूटनीति के द्वारा श्एक सूर्य, एक विश्व और एक ग्रिडश् की बात कर चुका है. भारत अगर क्वैड की मदद से ग्रीन एनर्जी का केंद्र बनता है और हिंद-प्रशांत क्षेत्र को हरित बनाने का उत्तरदायित्व भारत को मिलता है, तो बहुत कुछ बदल जायेगा. ऐसे में, कई देश सस्ता और टिकाऊ विकास के विकल्प को अपनाते हुए चीन का साथ छोड़ कर क्वैड की टोली में शामिल हो जायेंगे. क्वैड के माध्यम से पड़ोसी देशों में भी भारत की साख मजबूत बनेगी. पड़ोसी देशों में भारत विरोधी लहर पैदा करने की कोशिश चीन द्वारा कई दशकों से की जा रही है. ये देश भारतीय सांस्कृतिक विरासत के साथ जुड़े हुए हैं. सुनील आंबेकर ने अपनी पुस्तक में लिखा है कि नेपाल, भूटान, बांग्लादेश, श्रीलंका, म्यांमार और उत्तर-पूर्वी देशों में भारत की अमिट छाप है. भारत ने सिल्क रूट के द्वारा उनके बीच समानता और मित्रता की छाप छोड़ी है. आज भी भारत की सोच उसी सांस्कृतिक विरासत पर टिकी हुई है. चीन, अमेरिका के राष्ट्रपति चुनाव के परिणाम की बाट देख रहा है. उसे उम्मीद है कि रिपब्लिकन पार्टी की हार और डेमोक्रेटिक पार्टी की जीत के साथ चीन-अमेरिका संघर्ष पर विराम लग जायेगा तथा पुनः चीन पर अंतरराष्ट्रीय अंकुश समाप्त हो जायेगा. इसलिए जरूरी है कि क्वैड देश भारत को वे सारे संसाधन मुहैया कराएं, जिससे चीन की विस्तारवादी गति को रोका जा सके और भारत द्वारा संचालित व्यवस्था को व्यापक बनाया जा सके.

चीन की सामरिक शक्ति आर्थिक मजबूती के कारण से ही पैदा हुई है, जिसके कारण वह अपने पड़ोसी देशों को काटने लगा. उसकी शक्ति का पतन भी उसके आर्थिक ढांचे को तोड़कर ही सुनिश्चित किया जा सकता है. इसके लिए आत्मनिर्भर भारत से बेहतर विकल्प दुनिया के पास नहीं हो सकता है. भारत की संस्कृति में विस्तारवाद कभी रहा ही नहीं है, इसलिए क्वैड के देशों को इस पर गंभीरता से सोचना होगा.कोरोना महामारी ने दुनिया को बहुत कुछ समझाया है. जिस तरीके से आकंठ भौतिकवाद ने दुनिया को विलासिता से तबाह किया है, उससे मुक्ति की प्रेरणा भी इस महामारी ने दी है और यह भी इंगित किया है कि पड़ोसी को भूखा रखकर आप चौन की नींद नहीं सो सकते हैं. पूरा विश्व एक श्रेणी में बंधा हुआ है, चिंगारी कहीं से भी उठे, उससे लगी आग सबको तबाह कर देगी. यह दो टूक शिक्षा भी भारतीय संस्कृति की देन है.

आत्मनिर्भर भारत में नौकरशाही का टंटा

वर्तमान में चीन से सम्पूर्ण विश्व असंतुष्ट है और तमाम देश चीन से माल के आयातों पर प्रतिबन्ध लगाने की दिशा में हैं। बहुराष्ट्रीय कम्पनियां चीन से बाहर जाकर दूसरे देशों में माल के उत्पादन को उत्सुक हैं। इस परिस्थिति में हमारे सामने अवसर है कि हम चीन के द्वारा खाली की गई जमीन को हथिया कर उस पर अपना वर्चस्व स्थापित कर लें और विश्व बाजार में अपना स्थान बना लें। लेकिन विषय सिर्फ चीन का नहीं है। यदि हमें विश्व बाजार में अपना स्थान बनाना है तो थाईलैंड और वियतनाम जैसे देशों से भी प्रतिस्पर्धा करनी होगी अन्यथा खरीदार चीन के स्थान पर भारत से न खरीदकर वियतनाम से खरीदेगा। अंततरू में हमें सम्पूर्ण विश्व में सबसे सस्ता माल बनाकर बाजार में उपलब्ध कराना होगा। तब ही हम आत्मनिर्भर भारत का सपना साकार कर पायेंगे। आत्मनिर्भरता हासिल करने के लिए सरकार ने 200 लाख करोड़ रुपये का विशाल आत्मनिर्भर पैकेज लागू किया है। इस पैकेज का प्रमुख बिंदु कठिन परिस्थितयों से जूझने वालों को ऋण उपलब्ध करना है जिससे ये कोविड संकट को पार कर सामान्य परिस्थिति बहाल होने तक अपना अस्तित्व जीवित रख सकें। लेकिन सामान्य परिस्थिति आएगी यह संदेहास्पद है। आस्ट्रेलिया के प्रधान मंत्री स्कॉट मारिसन के अनुसार आने वाला समय श्गरीबी, कठिनता और अव्यवस्था से भरा हुआ होगा, विश्व व्यापार में गिरावट आएगी, देशों का व्यापार असंतुलित होता जाएगा और इनके बीच विवाद उत्पन्न होगाश। कोविड का वायरस भी गिरगिट की तरह अपना रंग रूप बदलता जा रहा है और यूरोप के कई देशों में इसकी दूसरी लहर आई है। अतएव हमें यह नहीं मान लेना चाहिए कि यह एक अल्पकालिक संकट है जिसे हम ऋण देकर पार कर जायेंगे। बल्कि देश की आत्मनिर्भरता हासिल करने के लिए मौलिक विषयों पर ध्यान देना होगा। इस दिशा में चिंता का विषय है कि सिटी बैंक की रिसर्च संस्था ने एक रपट में कहा है कि पिछले 6 वर्षों में भारत के मैनुफैक्चरिंग उद्योग के प्रमुख संकेतों में तनिक भी सुधार नहीं हुआ है। यह खतरे की घंटी है क्योंकि यदि हमारी मैन्युफैक्चरिंग में सुधार नहीं हुआ है तो हम थाईलैंड और वियतनाम की तुलना में सस्ता माल नहीं बना सकेंगे और विश्व बाजार में व्यापार में अपना स्थान नहीं बना पायेंगे।

इस परिप्रेक्ष्य में फेडरेशन आफ फार्मा इंटरप्योनोर आफ इंडिया के बी आर सिकरी के वक्तव्य पर ध्यान देना चाहिए। उन्होंने कहा है कि भारत का फार्मा उद्योग चीन से इसलिए आयात करता है क्योंकि भारत में उत्पादन लागत ज्यादा है। उत्पादन लागत के ज्यादा होने के 3 प्रमुख कारण हैं। पहला, यह कि किसी भी कानूनी स्वीकृति को लेने में अधिक समय लगता है और पर्यावरण का कानून जड़ है। दूसरा, कारण यह कि देश में जमीन महंगी है। तीसरा, यह कि बिजली महंगी है। इन तीनों में पहला कारण मूल रूप से नौकरशाही के भ्रष्टाचार से जुड़ा हुआ है। अपने देश में किसी भी सरकारी दफ्तर में फाइल को एक डेस्क से दूसरी डेस्क तक ले जाने के लिए भी पियून की जेब गरम करनी पड़ती है। जहां तक महंगी जमीन की बात है इससे आत्मसात करना चाहिए क्योंकि यह पैसा अंततः किसानों अथवा भूमि धारकों को मिलता है। उनके अधिकारों पर चोट करना अनुचित होगा। इसके अतिरिक्त सामान्य रूप से किसी फैक्ट्री कि कुल लगत में भूमि का हिस्सा, मेरे अनुमान से 5 प्रतिशत से ज्यादा नहीं होता है। तीसरा कारण महंगी बिजली को बताया गया है। इसका भी मूल स्वरूप नौकरशाही के भ्रष्टाचार से जुड़ा हुआ है। मेरे संज्ञान में ऐसे उद्योग हैं जो कि बिजली बोर्ड के अधिकारियों की मिलीभगत से मीटर को बाई पास करके अपने उद्योगों को चलाते हैं। नौकरशाही द्वारा नम्बर 2 में बेची गई बिजली का भार अंततरू ईमानदार बिजली के उपभोक्ताओं पर पड़ता है और यह बिजली के महंगे होने का प्रमुख कारण है। बताते चलें कि अपने देश में वर्तमान में सोलर बिजली का दाम लगभग 3 रुपये प्रति यूनिट है जो कि विश्व में बिजली के दाम के समकक्ष है। हमारे उपभोक्ता को महंगी बिजली मिलने का कारण उत्पादन से लेकर उपभोक्ता तक पहुंचाने में जो बिजली बोर्ड की व्यवस्था है। हमें यदि विश्व बाजार में चीन द्वारा खाली की जा रही जमीन पर काबिज होना है तो हमें अपने माल की उत्पादन लागत को कम करना होगा। जैसा कि ऊपर बताया गया है कि इसमें मुख्य कारक नौकरशाही का भ्रष्टाचार है। इस दिशा में प्रधानमंत्री मोदी ने एक सराहनीय कदम उठाया है कि प्रमुख पदों पर नियुक्ति के लिए वे केवल कागजों पर भरोसा नहीं करते हैं। जानकार बताते हैं कि प्रधानमंत्री कार्यालय से कुछ वरिष्ठ अधिकारियों को प्रत्याशी का मूल्यांकन करने उसके कार्यस्थल पर भेजा जाता है। ये अधिकारी उस प्रत्याशी की छवि और जनता के बीच विश्वसनीयता आदि की जानकारी प्राप्त कर प्रधानमंत्री को उपलब्ध कराते हैं। इसके बाद ही इनके प्रमुख पदों पर नियुक्ति का निर्णय लिया जाता है। प्रधानमंत्री का यह एक सराहनीय और सुदृढ़ कदम है। इस प्रक्रिया को सम्पूर्ण नौकरशाही पर लागू करने की जरूरत है। सरकार को चाहिए कि सभी प्रमुख अधिकारियों के पदोन्नति के पहले एक अलग स्वतंत्र व्यवस्था द्वारा इनका गुप्त मूल्यांकन कराएं। जैसे बिजली बोर्ड के अधिशासी आभियन्ता की पदोन्नति के पहले यह जांच एजेंसी उस क्षेत्र में जाए और उस क्षेत्र के बिजली उपभोक्ताओं से उस प्रत्याशी के बारे में जानकारी प्राप्त करे। दूसरा जैसा कि कौटिल्य ने कहा था कि सरकारी अधिकारियों द्वारा भ्रष्टाचार का पता लगाना उतना ही कठिन है जितना कि यह पता लगाना कि तालाब के पानी में से मछली ने कितना पानी पिया है। इस समस्या के लिए सुझाव दिया था कि राजा को एक जासूस व्यवस्था बनानी चाहिए जो कि स्वयं पहल करे और प्रमुख अधिकारियों की जांच करे और उन्हें जाल में फंसाए। ये जासूस स्वयं भ्रष्ट न हो जाएं इनके कार्य पर नजर रखने के लिए एक समानांतर दूसरी जासूस व्यवस्था बनानी चाहिए। सरकार को चाहिए कि इस प्रकार कि व्यवस्था बनाये जो जमीनी स्तर पर सरकारी नौकरशाही के भ्रष्टाचार पर नियन्त्रण करे। जैसा कि श्री सिकरी ने कहा है कि स्वीकृति मिलने में समय कम लगे और बिजली का दाम कम हो जाए और हमारे उद्योग वैश्विक प्रतिस्पर्धा में खड़े हो सकें। सरकार को साथ-साथ आयातकर में भी वृद्धि करनी चाहिए। आयात कर में वृद्धि करने से विदेशी कम्पनियों द्वारा भारत में माल बेचना महंगा पड़ेगा और तदानुसार भारत में माल के उत्पादन से लाभ कमाना संभव होगा। जब तक सरकार इन मौलिक समस्याओं का समाधान नहीं करती है तब तक हम थाईलैंड और वियतनाम से प्रतिस्पर्धा नहीं कर सकेंगे और वर्तमान में चीन द्वारा जो विश्व व्यापार में जो जगह खाली की जा रही है उसपर कब्जा नहीं कर सकेंगे। घरेलू अव्यवस्था के कारण यह सुनहरा अवसर हमारे हाथ से निकल जायेगा।

अर्थव्यवस्था में कोरोना के रहते अनिश्चितता की स्थिति

विगत सप्ताह मौद्रिक समिति की तीन दिवसीय बैठक के बाद रिजर्व के गवर्नर शक्तिकांत दास ने कहा कि पटरी से उतरी हुई भारतीय अर्थव्यवस्था के चालू साल 2020-21 में जीडीपी दर में औसतन 9.5 प्रतिशत की गिरावट आ सकती है। रिजर्व बैंक के गवर्नर ने कहा कि अर्थव्यवस्था को पटरी पर आने के बाद पिछले साल की तरह गतिमान होने में एक साल से अधिक समय लग सकता है। रिजर्व बैंक ने चालू साल की अप्रैल-जून तिमाही में जीडीपी में 23.9 प्रतिशत की गिरावट का अनुमान व्यक्त किया था। मौद्रिक नीति समिति ने अपनी तीन दिन की बैठक में रेपो रेट को 4 प्रतिशत और रिवर्स रेपो रेट को 3.5 प्रतिशत यथावत रखने का फैसला किया है। मौद्रिक नीति समिति मुख्यतया अपनी बैठकों में खुदरा मुद्रा स्फीति स्थिति को देखते हुए रेपो रेट और रिवर्स रेपो रेट में बदलाव की सिफारिश करती है। उद्योपतियों को खुदरा महंगाई की वर्तमान स्थिति को देखते हुए नीतिगत ब्याज दरों में कटौती की संभावनाएं नहीं थी, इसलिए उनको कोई निराश नहीं हुई। वित्त मंत्रालय के मुख्य आर्थिक सलाहकार के. सुब्रमण्यम अर्थव्यवस्था के शीघ्र पटरी पर लौटने के अधिक आशान्वित है। उनका कहना है कि भारत से कोरोना की बिदाई होते ही भारतीय अर्थव्यवस्था में अंग्रेजी के अक्षर वी के आकार की तेजी से सुधार होगा। रिजर्व बैंक के गवर्नर शक्तिकांत दास का कहना है कि अर्थव्यवस्था में अंग्रेजी के डब्लू आकार में सुधार होने की संभावना है। रिजर्व बैंक के गवर्नर का कहना है कि अर्थव्यवस्था में पहले सुधार होगा फिर गिरावट आएगी तथा उसके पश्चात अर्थव्यवस्था पटरी पर लौट सकेगी अर्थात अर्थव्यवस्था के वर्ष 2019-20 के स्तर पर लौटने में एक साल से अधिक समय लगेगा। सिंगापुर में एक प्रसिद्ध हेज फंड मैनेजर समीर अरोड़ा के अनुसार, भारतीय अर्थव्यवस्था में अंग्रेजी वर्णमाला केरू के रू आकार का सुधार होगा। वे इसे समझाते हुए कहते हैं कि कोविड-19 के बाद अर्थव्यवस्था के कुछ अंगों में तेजी से सुधार होगा तो कुछ अंगों के समस्याग्रस्त बने रहने से धीरे-धीरे सुधार होगा। भारतीय के अधिकांश बड़े उद्योगपति रिजर्व बैंक के गवर्नर की वी शेप्ड सुधार थ्योरी से सहमत हैं। कोविड-19 जनित लॉक डाउन के कारण चालू साल जीडीपी में होने वाली गिरावट के बारे में सभी अर्थशास्त्री एकमत हैं कि पिछले 25 सालों में पहली बार वर्ष 2020-21 में भारत की जीडीपी दर ऋणात्मक रहने वाली है किंतु जीडीपी कितने प्रतिशत ऋणात्मक रहने वाली है इसके बारे

में अर्थशास्त्रियों में मतभेद हैं। रिजर्व बैंक के गवर्नर शक्तिकांत दास के अनुसार वर्ष 2019-20 की तुलना में चालू साल 2020-21 में जीडीपी के 9.5 प्रतिशत ऋणात्मक रहने की संभावना है। जबकि प्रसिद्ध अर्थशास्त्री प्रणव सेन के अनुसार जीडीपी में 14 प्रतिशत की गिरावट रहने वाली है। दो माह पूर्व आई.एम.एफ ने भारत की जीडीपी चालू साल में 5 प्रतिशत ऋणात्मक रहने का अनुमान व्यक्त किया था। अनेक ख्यातिप्राप्त निजी अनुसंधान संस्थानों का अनुमान है कि भारत की जीडीपी दर 10 प्रतिशत रहने की संभावना है। भारत ही नहीं चीन को छोड़कर विश्व के लगभग सभी बड़े देशों की जीडीपी वर्ष 2020-21 में 10 से 15 प्रतिशत ऋणात्मक रहने का अनुमान है।उत्पादन और रोजगार अर्थव्यवस्था के दो प्रमुख अंग माने जाते हैं। उत्पादन से अर्थव्यवस्था में वस्तुओं की पूर्ति में वृद्धि होती है जबकि बाजार में मांग में वृद्धि के लिए रोजगार में वृद्धि बहुत जरूरी है। पिछले कुछ महीनों में लॉक डाउन हटाए जाने के कारण वस्तुओं के उत्पादन में तो वृद्धि हुई है किंतु रोजगार में नाममात्र को बढ़ोतरी हुई है। लॉक डाउन हटाए जाने के कारण उद्योग व्यवसाय पुनरू खुल रहे हैं किंतु सोशल डिस्टेंसिंग को प्रभावकारी बनाने के लिए सरकार द्वारा निर्देश जारी किए गए हैं कि व्यवसायी एक तिहाई श्रमशक्ति से काम चलाएं, इस कारण से भी श्रमिकों को रोजगार मिलने में कठिनाई हो रही है। कुल मिलाकर बेरोजगारी की स्थिति अभी भी भयंकर बनी हुई है। जमीनी सर्वेक्षणों के अनुसार लघु एवं मध्यम क्षेत्र के एक तिहाई से ज्यादा कार्यरत कर्मियों को वेतन नहीं मिल पा रहा है तथा एक तिहाई कर्मियों को मात्र 50 प्रतिशत वेतन दिया जा रहा है। इस प्रकार तकनीकी रूप से जिन्हें नौकरी पर लगा हुआ दर्शाया जा रहा है उन्हें एक प्रकार से वेतनहीन कर्मचारी कहा जा सकता है। भारत में बेरोजगारी की इससे बुरी स्थिति अभी तक कभी नहीं रही। पिछली तिमाही में कंस्ट्रक्शन सेक्टर, व्यापार व होटल व्यवसाय, मैन्यूफैक्चरिंग सेक्टर तथा खनन क्षेत्र में अन्य क्षेत्रों की तुलना में उत्पादन व रोजगार दोनों में ही अधिक गिरावट देखी गई थी। अगले आने वाले महीनों में रीयल स्टेट, पर्यटन व होटल व्यवसाय तथा एअरलाइंस की स्थिति में सुधार की गुंजाइश कम ही नजर आ रही है। सभी राज्यों में बारिश अच्छी होने के कारण कृषि क्षेत्र में उत्पादन व रोजगार की स्थिति अच्छी बने रहने की संभावना है। ऑटोमोबाइल उद्योग द्वारा ग्राहकों को कीमतों में आकर्षक छूट व उपहार दिए जाने के कारण आगे आने वाले त्योहारों के दिनों में अच्छी बिक्री की संभावनाएं हैं। पिछले महीनों भारतीय रेलवे द्वारा बड़ी मात्रा में मालगाडियों के परिचालन के कारण राजस्व में अच्छी खासी बढ़ोतरी होने के कारण भारी मुनाफे में परिचालन हो रहा है। जुलाई-सितंबर 2020 की तिमाह में अप्रैल-जून 2020 की तिमाही में जीडीपी दर में सुधार हुआ है। जुलाई-सितंबर तिमाही बरसात का मौसम होने के कारण व्यापार की दृष्टि मंदी का मौसम माना जाता है जबकि अक्टूबर-दिसंबर तिमाही भारत में त्योहारों और शादी-विवाह का मौसम माना जाता है इसलिए इस तिमाही में व्यापार फलता-फूलता है। अक्टूबर-दिसंबर तिमाही में कंज्यूमर डयूरेबल वस्तुओं की मांग बढने से व्यवसाय बढने की संभावना है। अक्टूबर-दिसंबर तिमाही के समान ही जनवरी-मार्च तिमाही भी व्यापार-व्यवसाय के लिहाज से आशाप्रद तिमाही मानी जा सकती है।उद्योग-व्यापार में सुधार की संभावनाओं को देखते हुए अगली तिमाही में रोजगार में सुधार की भी संभावना है। जहां तक आगे आने वाले साल का सवाल है जब तक अर्थव्यवस्था की पटरी को क्षतिग्रस्त करने वाले कोविड-19 की भारत से बिदाई नहीं हो जाती तब तक आर्थिक विकास के बारे में निश्चित रूप से कुछ भी कहना कठिन है। अर्थव्यवस्था के लिए दूसरा सबसे बड़ा खतरा चीन द्वारा रचित सीमा विवाद है जिसकी वजह से बढ़े हुए राजकोषीय घाटे के कारण जीडीपी राजकोषीय घाटा अनुपात तथा जीडीपी कर्ज अनुपात दोनों ही एफआरबीएम एक्ट के तहत तयशुदा सीमा से पार जा चुके हैं। इस कारण आर्थिक विकास प्रभावित हो रहा है।

कोलकाता नाइट राइडर्स के कप्तान दिनेश कार्तिक बोले, हमें बल्लेबाजी में करना होगा सुधार

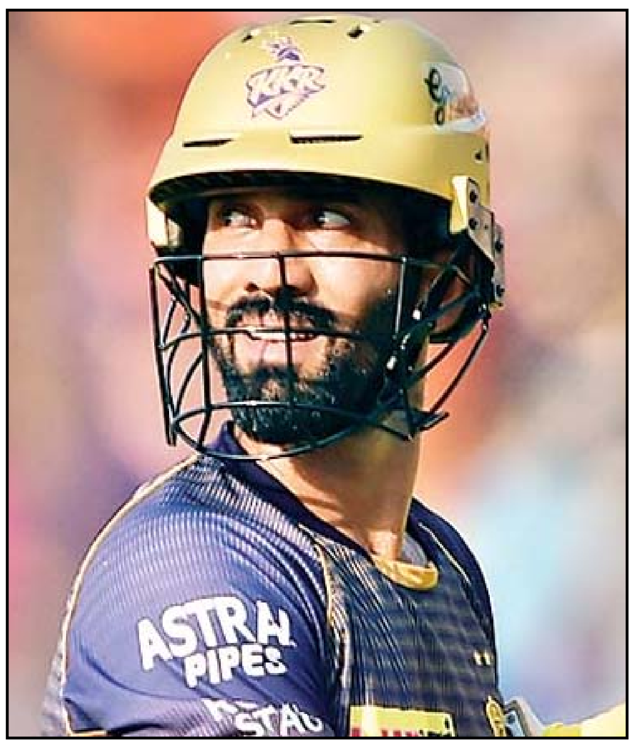

शारजाह| एजेंसी।

रॉयल चैलेंजर्स बंगलूरू के खिलाफ मिली करारी हार के बाद कोलकाता नाइट राइडर्स के कप्तान दिनेश कार्तिक ने कहा है कि उनकी टीम को बल्लेबाजी में सुधार करना होगा। बंगलूरू ने एबी डीविलियर्स के 33 गेंदों में नाबाद 73 रन की विस्फोटक पारी की बदौलत कोलकाता को 195 रन का लक्ष्य दिया था, जिसके जवाब में कोलकाता की टीम 20 ओवर में नौ विकेट पर 112 रन ही बना सकी थी और उसे 82 रनों से हार का सामना करना पड़ा। कार्तिक ने कहा कि एबी डीविलियर्स विश्व स्तरीय बल्लेबाज हैं और उन्हें ऐसे मैदान पर रोकना कठिन है। उनकी पारी ने मैच का रुख पलटा। हमें कई चीजों को सही करना होगा और अपनी गलतियों से सीख लेनी होगी। बल्लेबाजी ऐसा विभाग है जहां हमें सुधार की जरुरत है। उन्होंने कहा कि हमारे पास अगले मुकाबले के लिए तीन दिन का वक्त है। यह आईपीएल काफी मजेदार है और कई टीमें पहले बल्लेबाजी करना पसंद कर रही हैं। मेरे ख्याल से सभी कप्तानों के लिए ऐसा दिन आता है जब उनकी रणनीति के हिसाब से काम नहीं होते हैं और ऐसा दिन मेरे लिए बंगलूरू के खिलाफ था। मैं इस बारे में ज्यादा नहीं सोच रहा और अगले मैच की तैयारी

मुंबई इंडियंस सभी विरोधी के खिलाफ 50 प्रतिशत से अधिक मैच जीतने वाली इकलौती

नई दिल्ली | एजेंसी।

मुंबई इंडियंस आईपीएल-13 में 5 जीत के साथ टॉप पर चल रही है। टीम ने रविवार को दिल्ली कैपिटल्स को 5 विकेट से हराया। इसके साथ टीम ने एक नया रिकॉर्ड अपने नाम कर लिया। मुंबई की टीम लीग में खेल रही अन्य 7 विरोधी टीम के खिलाफ 50 फीसदी से अधिक मैच जीत चुकी है। वह ऐसा करने वाली इकलौती टीम है। उसने दो टीम के खिलाफ 60 फीसदी से अधिक मैच जीते हैं। मुंबई के कप्तान रोहित शर्मा आईपीएल में 60 फीसदी से अधिक मैच जीतने वाले एकमात्र कप्तान भी हैं। उन्होंने टीम को सबसे ज्यादा 4 बार लीग का खिताब भी दिलाया है। टीम ने चौथी बार शुरुआती 7 मुकाबलों में से 5 जीते हैं। दिल्ली के कागिसो रबाडा ने 2017 में डेब्यू किया था। उन्होंने तब से अब तक लगातार 25 मैच में कम से कम एक विकेट लिया है। उनके 48 विकेट हैं। लगातार 25 मैच में सबसे ज्यादा विकेट लेने के मामले में रबाडा ने लसिथ मलिंगा की बराबरी भी कर ली है।

वॉर्नर, मोर्गन, फिंच, बेयरस्टो जैसे स्टार खिलाड़ियों के विकेट लेकर रवि बेस्ट

नई दिल्ली (जी.एन.एस) यूएई में खेले जा रहे आईपीएल-13 का आधा सफर हो चुका है। सभी टीमें 7-7 मैच खेल चुकी हैं। इस आईपीएल में राजस्थान के भी 8 खिलाड़ी अलग-अलग टीमों में शामिल हैं। इनमें से दो का अभी डेब्यू नहीं हुआ है। हां, अलग-अलग टीमों में खेल रहे राजस्थान के गेंदबाज लगातार अच्छा प्रदर्शन कर रहे हैं। इनमें लेग स्पिनर रवि बिश्नोई, राहुल चाहर और मीडियम पेसर दीपक चाहर, खलील अहमद और कमलेश नागरकोटी शामिल हैं।

इन पांचों गेंदबाजों के अभी तक के प्रदर्शन की तुलना की जाए तो बेस्ट प्रदर्शन किंग्स इलेवन पंजाब से खेल रहे युवा रवि बिश्नोई का रहा है। उन्होंने अब तक खेले 7 मैचों में 8 विकेट लिए। उन्होंने जिन-जिन बल्लेबाजों का शिकार किया है उनमें डेविड वॉर्नर, जॉनी बेयरस्टो, ऋषभ पंत, आरोन फिंच, इयोन मोर्गन जैसे बड़े नाम शामिल हैं।

मिड-सीजन प्लेयर ट्रांसफर विंडो खुली किस टीम से कौन से खिलाड़ी हैं योग्य

नई दिल्ली | एजेंसी।

इंडियन प्रीमियर लीग 2020 का आधा सीजन पूरा हो चुका है। सभी टीमें सात-सात मैच खेल चुकी हैं। मंगलवार से मिड-सीजन ट्रांसफर विंडो खुल गई है और पांच दिन तक यह विंडो खुली रहेगी। इसमें फ्रैंचाइजी टीमों को अपनी पोजीशन मजबूत करने के लिए दूसरी टीमों से खिलाड़ी ट्रांसफर करने का मौका मिलेगा। साथ ही जो खिलाड़ी अभी तक टीमों की स्कीम में फिट नहीं हुए हैं फ्रैंचाइजी उन्हें ट्रांसफर भी कर सकती है। सोमवार को रॉयल चैलेंजर्स बैंगलोर और कोलकाता नाइट राइडर्स के बीच खेला गया मैच सीजन का 28वां मुकाबला था। अब सभी टीमें सात-सात मैच खेल चुकी हैं। अब बड़ा सवाल यह है कि किस खिलाड़ी को ट्रांसफर किया जा सकता है और किसे नहीं? केवल उन्हीं खिलाड़ियों को ट्रांसफर किया जा सकता है जिन्होंने दो या उससे कम मैच खेले हैं। दूसरी ओर, किसी खिलाड़ी ने दो से ज्यादा मैच खेले हैं उसे ट्रांसफर नहीं किया जा सकता। इसके साथ ही फ्रैंचाइजी और खिलाड़ी के बीच सहमति होना भी जरूरी है। अंतिम फैसला फ्रैंचाइजी को लेना है कि वह किन खिलाड़ियों को रखना चाहता है या छोड़ना चाहता है। खिलाड़ी सिर्फ इस सीजन के बाकी समय के लिए ट्रांसफर होगा और अगले सीजन की शुरुआत में वह पुरानी फ्रैंचाइजी में वापस आ जाएगा। किस टीम के कौन से खिलाड़ी ट्रांसफर के पैमाने पर उतरते हैं खरे मुंबई इंडियंस आदित्य तारे, अनुकूल रॉय, मिशेल मैकलेनगन, क्रिस लिन, नाथन कूल्टर-नाइल, सौरभ तिवारी, मोहसिन खान, दिग्विजय देशमुख, प्रिंस बलवंत राय, धवल कुलकर्णी, जयंत यादव, शेरफन रदरफर्ड, अनमोलप्रीत सिंह चेन्नै सुपर किंग्स केएम आसिफ, इमरान ताहिर, नारायण जगदीशन, कर्ण शर्मा, मिशेल सैंटनर, मोनू कुमार, रुतुराज गायकवाड़, आर. साई किशोर, जोश हेजलुवड दिल्ली कैपिटल्स कीमो पॉल, अजिंक्य रहाणे, संदीप लामिछाने, ऐल्कस कैरी, आवेश खान, ललित यादव, डेनियल सेम्स, तुषार देशपांडे, मोहित शर्मा, इशांत शर्मा सनराइजर्स हैदराबाद श्रीवत्स गोस्वामी, सिद्धार्थ कौल, ऋद्धिमान साहा, विजय शंकर, विराट सिंह, बी.संदीप, फैबियन एलन, संजय यादव, बासिल थंपी, बिली स्टानलेक, मोहम्मद नबी, शाहबाज नदीम किंग्स इलेवन पंजाब मुजीब उर रहमान, मुर्गन अश्विन, दीपक हूडा, इशान पोरेल, क्रिस जॉर्डन, प्रभसिमरन सिंह, तजिंदर सिंह, अर्शदीप सिंह, दर्शन नालकंडे,

कृष्णप्पा गौतम, हारदुस विलजोन, क्रिस गेल, हरप्रीत बरार, जगदीश सुचित

सीजन में दो टीमों के बीच दोबारा मुकाबले शुरू

लीग के 14वें मैच में दुबई में ही हैदराबाद ने चेन्नई को 7 रन से हराया था।

मुंबई | एजेंसी।

आईपीएल के 13वें सीजन का अब सेकेंड हाफ शुरू हो गया है। लीग में सभी टीमों ने एक-दूसरे से एक-एक मुकाबला खेल लिया है। ऐसे में लीग में आज से सभी टीमें दोबारा आमने-सामने होंगी। चेन्नई के पास हैदराबाद के खिलाफ मिली पिछली हार का बदला लेने का मौका होगा। लीग के 14वें मैच में दुबई में ही हैदराबाद ने चेन्नई को 7 रन से हराया था। हैदराबाद ने पहले बल्लेबाजी करते हुए चेन्नई को 165 रन का टारगेट दिया था। जिसके जवाब में चेन्नई की टीम 157 रन ही बना पाई थी।

चेन्नई ने हैदराबाद के खिलाफ 13 में से 9 मुकाबले जीते

ओवरऑल रिकॉर्ड की बात करें, तो चेन्नई का पलड़ा भारी है। दोनों के बीच अब तक कुल 13 मैच खेले गए हैं, जिनमें चेन्नई ने 9 और हैदराबाद ने 4 मुकाबले जीते हैं। इस सीजन में दोनों ही टीमों ने अपना पिछला मुकबला हारा है। ऐसे में दोनों के पास इस मैच को जीतकर लय हासिल करने का मौका होगा।

चेन्नई के लिए डु प्लेसिस ने बनाए सबसे ज्यादा रन

चेन्नई की बल्लेबाजी की बात करें, तो फाफ डु प्लेसिस ही फॉर्म में दिखे हैं। उन्होंने सीजन में खेले 7 मैचों में 307 रन बनाए हैं। इसमें 3 फिफ्टी भी शामिल है। किंग्स इलेवन पंजाब के खिलाफ उन्होंने 87 रन की नाबाद पारी खेली थी। इसके अलावा शेन वॉटसन ने अब तक लीग में 199 रन बनाए हैं।

चेन्नई में शार्दुल और करन ने लिए सबसे ज्यादा विकेट

गेंदबाजी में सैम करन और शार्दुल ठाकुर ने शानदार गेंदबाजी की है। करन ने सीजन में 7 मैच में 8 विकेट लिए हैं। वहीं शार्दुल ने 4 मैचों में 7 बल्लेबाजों को आउट किया है। इनके अलावा दीपक चाहर ने 7 मैचों में 6 विकेट लिए हैं।

हैदराबाद के लिए वॉर्नर-बेयरस्टो टॉप स्कोरर

हैदराबाद के लिए कप्तान डेविड वॉर्नर और जॉनी बेयरस्टो टॉप स्कोरर रहे हैं। वॉर्नर ने 7 मैचों में 2 फिफ्टी के साथ 275 रन और बेयरस्टो ने 7 मैचों में 3 फिफ्टी के साथ 257 रन बनाए हैं। इसके अलावा मनीष पांडे ने भी लीग में अब तक 202 रन बनाए हैं।

हैदराबाद के राशिद पर्पल कैप की रेस में

हैदराबाद के स्पिनर राशिद खान लीग में सबसे ज्यादा विकेट लेने वाले गेंदबाजों की लिस्ट में चौथे स्थान पर हैं। राशिद ने अब तक सीजन में 7 मैचों में 10 विकेट लिए हैं। वहीं, टी नटराजन ने अब तक सीजन में 7 बल्लेबाजों को आउट किया है।

दोनों टीम के महंगे खिलाडी

सीएसके में कप्तान धोनी सबसे महंगे खिलाड़ी हैं। टीम उन्हें एक सीजन के 15 करोड़ रुपए देगी। उनके बाद टीम में रविंद्र जडेजा का नाम है, जिन्हें इस सीजन में 7 करोड़ रुपए मिलेंगे। वहीं हैदराबाद के सबसे महंगे खिलाड़ी डेविड वॉर्नर हैं। उन्हें फ्रेंचाइजी सीजन का 12.50 करोड़ रुपए देगी।

इसके बाद टीम के दूसरे महंगे खिलाड़ी मनीष पांडे (11 करोड़) हैं।

केकेआर के खिलाफ आरसीबी की सबसे बड़ी जीत

बेंगलुरु ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 195 रन का टारगेट दिया था। जवाब में केकेआर 9 विकेट पर 112 रन ही बना सकी। कप्तान दिनेश कार्तिक समेत टीम के 8 बल्लेबाज दहाई का आंकड़ा भी नहीं छू सके।

मुंबई एजेंसी।

आईपीएल के 13वें सीजन के 28वें मैच में रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु (आरसीबी) ने कोलकाता नाइट राइडर्स (केकेआर) को 82 रन से हरा दिया। रनों के लिहाज से केकेआर के खिलाफ आरसीबी की यह सबसे बड़ी जीत है। इससे पहले बेंगलुरु ने कोलकाता को 2019 में 10 रन से हराया था। इस जीत के साथ बेंगलुरु पॉइंट्स टेबल में तीसरे स्थान पर पहुंच गई है।

केकेआर के शुभमन गिल ने 34, राहुल त्रिपाठी और आंद्रे रसेल ने 16-16 रन बनाए। बेंगलुरु के वॉशिंगटन सुंदर और क्रिस मॉरिस को 2-2 विकेट मिले। नवदीप सैनी, इसुरु उडाना, युजवेंद्र चहल और मोहम्मद सिराज को 1-1 विकेट मिला।

नहीं चला दिनेश कार्तिक का बल्ला

पिछले मैच के हीरो केकेआर के कप्तान दिनेश कार्तिक इस मैच में सिर्फ एक रन ही बना सके। उन्हें युजवेंद्र चहल ने बोल्ड किया। इसके बाद इयोन मॉर्गन भी ज्यादा टिक नहीं सके और 8 रन बनाकर वॉशिंगटन सुंदर की बॉल पर इसुरु उडाना को कैच दे बैठे।

बेंटन-राणा सस्ते में आउट

केकेआर की शुरुआत अच्छी नहीं रही। सुनील नरेन की जगह टीम में शामिल किए गए टॉम बेंटन (8) कुछ खास नहीं कर सके। उन्हें नवदीप सैनी ने बोल्ड किया। इसके बाद नीतीश राणा (9) को वॉशिंगटन सुंदर ने आउट किया। शुभमन गिल 34 रन बनाकर रन आउट हुए।

डिविलियर्स-कोहली ने आखिरी 5 ओवर में 83 रन जोड़े

इससे पहले टॉस जीतकर बल्लेबाजी करते हुए आरसीबी ने 2 विकेट पर 194 रन बनाए। डिविलियर्स ने 23 बॉल पर शानदार फिफ्टी लगाई। वे 33 बॉल पर 73 रन बनाकर नॉट आउट रहे। वहीं, विराट कोहली ने 28 बॉल पर 33 रन बनाए। उन्होंने अपनी पारी में सिर्फ एक ही चौका लगाया। दोनों आखिरी 5 ओवर में 83 रन बनाए। केकेआर के आंद्रे रसेल और प्रसिद्ध कृष्णा को एक-एक विकेट मिला।

डिविलियर्स-कोहली ने मिलकर 3000 से ज्यादा रन बनाए

एबी डिविलियर्स और विराट कोहली ने ओवरऑल आईपीएल में 3000 से ज्यादा रन साथ मिलकर बनाए। दोनों के बीच इस मैच में तीसरे विकेट के लिए 47 बॉल पर 100 रन की नाबाद पार्टनरशिप हुई।

कोहली-डिविलियर्स के बीच रिकॉर्ड 10वीं बार सेंचुरी पार्टनरशिप

कोहली-डिविलियर्स ने आईपीएल में रिकॉर्ड 10वीं बार 100 रन की पार्टनरशिप की। इनके अलावा कोहली-क्रिस गेल के बीच 9 बार, शिखर धवन-डेविड वॉर्नर के बीच 9 बार, जॉनी बेयरस्टो-वॉर्नर और गौतम गंभीर-रॉबिन उथप्पा के बीच 5-5 बार सेंचुरी पार्टनरशिप हो चुकी है।

फिंच-पडिक्कल के बीच 67 रन की पार्टनरशिप हुई

आरसीबी के ओपनर बल्लेबाज एरॉन फिंच और देवदत्त पडिक्कल ने टीम को शानदार शुरुआत दिलाई। दोनों के बीच 67 रन की ओपनिंग पार्टनरशिप हुई। इस पार्टनरशिप को आंद्रे रसेल ने तोड़ा। उन्होंने पडिक्कल (32) को बोल्ड किया। फिंच (47) को प्रसिद्ध कृष्णा ने आउट किया।

रसेल के ओवरऑल टी-20 में 300 विकेट पूरे

आंद्रे रसेल ने ओवरऑल टी-20 करियर में अपने 300 विकेट पूरे कर लिए हैं। उन्होंने बेंगलुरु के ओपनर देवदत्त पडिक्कल को अपना 300वां शिकार बनाया। इस मैच से पहले वेस्टइंडीज के ऑलराउंडर ने इंटरनेशनल, घरेलू और सभी देशों की लीग में खेले 336 टी-20 में 25.84 की औसत से 299 विकेट लिए थे।

दोनों टीमों में एक-एक बदलाव

दोनों टीमों में एक-एक बदलाव किया गया। आरसीबी में मोहम्मद सिराज को गुरकीरत सिंह मान की जगह शामिल किया गया। वहीं, केकेआर में सुनील नरेन की जगह इंग्लैंड के बैट्समैन टॉम बेंटन को शामिल किया गया। बेंटन का आईपीएल में यह डेब्यू मैच था।

सबसे महंगे-सस्ते प्लेयर्स की परफॉर्मेंस

कोलकाता के सबसे महंगे खिलाड़ी पैट कमिंस रहे। उन्हें सीजन के 15.50 करोड़ रुपए मिलेंगे। उन्होंने 4 ओवर में 38 रन दिए और कोई भी विकेट नहीं लिया। उन्होंने बैटिंग करते हुए सिर्फ एक रन ही बनाए। प्रसिद्ध कृष्णा (20 लाख) प्लेइंग इलेवन में सबसे सस्ते खिलाड़ी रहे। उन्होंने 4 ओवर में 42 रन देकर एक विकेट लिया।

वहीं, आरसीबी में कप्तान कोहली सबसे महंगे खिलाड़ी रहे। टीम उन्हें एक सीजन के 17 करोड़ रुपए देगी। कोहली ने 28 बॉल पर 33 रन बनाए। देवदत्त पडिक्कल (20 लाख) प्लेइंग इलेवन सबसे सस्ते खिलाड़ी रहे। उन्होंने 23 बॉल पर 32 रन बनाए।

कोलकाता ने 2 बार खिताब जीता, बेंगलुरु को अब भी इंतजार

आईपीएल इतिहास में कोलकाता ने अब तक दो बार फाइनल (2014, 2012) खेला और दोनों बार चैम्पियन रही है। वहीं, आरसीबी ने 2009 में अनिल कुंबले और 2011 में डेनियल विटोरी की कप्तानी में फाइनल खेला था। 2016 में विराट की कप्तानी में भी टीम फाइनल में पहुंची।

लेकिन, एक बार भी खिताब नहीं जीत सकी।

पूर्व बल्लेबाज आकाश चोपड़ा बोले, आईपीएल मैच साढ़े

राकेश पठानिया का ऐलान, धर्मशाला में खुलेंगे नेशनल शूटिंग सेंटर और सायना नेहवाल एकेडमी

धर्मशाला (जी.एन.एस) खेल नगरी धर्मशाला में नेशनल शूटिंग सेंटर और स्टार खिलाड़ी सायना नेहवाल की बैडमिंटन एकेडमी जल्द ही शुरू होंगे। प्रदेश सरकार के खेल एवं वन मंत्री राकेश पठानिया ने धर्मशाला में जानकारी दी। भाजपा धर्मशाला मंडल की बैठक का आयोजन मंडल अध्यक्ष अनिल चौधरी की अध्यक्षता में किया गया। बैठक में राकेश पठानिया वन मंत्री खास तौर पर उपस्थित रहे। उन्होंने कार्यकर्ताओं को धर्मशाला में प्रस्तावित नेशनल शूटिंग सेंटर, विश्व प्रसिद्ध बैडमिंटन खिलाड़ी सायना नेहवाल की अकादमी खोलने की सूचना दी। अध्यक्ष अनिल कुमार तथा धर्मशाला के विधायक विशाल नैहरिया ने धर्मशाला मंडल में ई-विस्तारक योजना की सफलता की चर्चा की तथा भारतीय जनता पार्टी द्वारा की जा रही समस्त गतिविधियों से कार्यकारिणी को अवगत करवाया तथा अग्रिम योजनाओं के विषय में चर्चा की। बैठक में मंडल अध्यक्ष अनिल चौधरी, महामंत्री राजेश वर्मा, सुदर्शन धीमान, जिला कार्यालय सचिव प्रकाश चौधरी, सचिव दिनेश कपूर, राकेश चौधरी, उप प्रधान राम कृष्ण चौधरी, रशपाल कपूर, जिला महामंत्री सचिन शर्मा मुख्य रूप से उपस्थित थे

संजू के नाम सबसे ज्यादा छक्के, आर्चर ने सबसे ज्यादा डॉट बॉल फेंकी

किंग्स इलेवन पंजाब इतने ही मैच में एक जीत के साथ सबसे निचले पायदान पर है।

नई दिल्ली | एजेंसी।

आईपीएल सीजन-13 में लीग स्टेज के 56 में से 28 मुकाबले हो चुके हैं। अब तक के सफर में डिफेंडिंग चैम्पियन मुंबई इंडियंस 7 में से 5 मैच जीतकर पॉइंट्स टेबल में टॉप पर काबिज है। किंग्स इलेवन पंजाब इतने ही मैच में एक जीत के साथ सबसे निचले पायदान पर है। जबकि टीम के कप्तान लोकेश राहुल सीजन में सबसे ज्यादा 387 रन के साथ ऑरेंज कैप की दावेदारी में सबसे आगे हैं।

इस दौरान राहुल ने एक शतक और 3 अर्धशतक भी जड़े हैं। इस शानदार फॉर्म के बावजूद वे अपनी पंजाब टीम को सिर्फ एक ही जीत दिला सके। राहुल के अलावा भी विराट कोहली, जसप्रीत बुमराह, शिवम मावी, राहुल तेवतिया और मयंक अग्रवाल जैसे भारतीय खिलाड़ी विदेशी प्लेयर्स पर भारी पड़ रहे हैं।

3 सबसे प्रॉमिसिंग प्लेयर

आईपीएल में इस सीजन में युवा भारतीय खिलाड़ियों ने गजब का प्रदर्शन किया है। इनमें से रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु के देवदत्त पडिक्कल, किंग्स इलेवन पंजाब के रवि बिश्नोई और सनराइजर्स हैदराबाद के टी नटराजन ने टीम इंडिया के लिए अपनी दावेदारी पेश कर दी है। पडिक्कल ने 7 मैचों में 3 फिफ्टी समेत 243 रन बनाए हैं। बिश्नोई ने 7 मैचों में 7.85 की इकोनॉमी के साथ 8 विकेट लिए हैं। वहीं, नटराजन ने 7 मैचों में 7 बल्लेबाजों को अपना शिकार बनाया है।

दिल्ली कैपिटल्स के तेज गेंदबाज इशांत शर्मा पसली में चोट के कारण आईपीएल-13 से बाहर

नई दिल्ली एजेंसी।

दिल्ली कैपिटल्स के तेज गेंदबाज इशांत शर्मा बायीं पसली में चोट के कारण आईपीएल-13 से बाहर हो गए हैं। दिल्ली कैपिटल्स ने सोमवार को एक बयान जारी कर बताया कि इशांत को दुबई में सात अक्टूबर को टीम के अभ्यास सत्र के दौरान बायीं पसली में तेज दर्द का अनुभव हुआ था। उसके बाद जांच से पता चला है कि अंदरूनी मांसपेशियों में खिंचाव हो गया है। इस चोट के कारण इशांत आईपीएल के शेष सत्र से बाहर हो गए हैं। दिल्ली कैपिटल्स ने कहा है कि टीम में सभी लोग इशांत के जल्द स्वस्थ होने की उम्मीद करते हैं। इशांत ने इस सत्र में अपनी टीम की तरफ से सिर्फ एक मैच खेला था और अबु धाबी में उन्होंने सनराइजर्स हैदराबाद के खिलाफ मुकाबले में 26 रन देकर कोई विकेट नहीं लिया था।

भारत की स्टार खिलाड़ी पीवी सिंधु को वर्ल्ड टूअर फाइनल्स में डायरेक्ट एंट्री नहीं

नई दिल्ली एजेंसी। भारत की स्टार खिलाड़ी पीवी सिंधु को विश्व टूअर फाइनल में सीधा प्रवेश नहीं मिलेगा क्योंकि विश्व बैडमिंटन महासंघ (बीडब्ल्यूएफ) ने सत्र के आखिर में होने वाले इस टूर्नामेंट में मौजूदा विश्व चैंपियन को स्वत प्रवेश नहीं देने का निर्णय लिया है। बीडब्ल्यूएफ के नियमों के अनुसार विश्व चैंपियंस को प्रतिष्ठित विश्व टूअर फाइनल्स में सीधा प्रवेश मिलता रहा है, लेकिन कोविड-19 महामारी के कारण अंतरराष्ट्रीय कैलेंडर में व्यावधान पड़ा है, और ऐसे में विश्व संस्था ने इस साल नियम को बदलने का फैसला किया।

तनिष्क के विज्ञापन पर भड़कीं कंगना रनौत, बोलीं- लव जिहाद को प्रमोट कर रहे हैं

हाल में जूलरी बनाने वाले ब्रैंड तनिष्क ने एक नया विज्ञापन रिलीज किया था। इस विज्ञापन पर काफी विवाद हो रहा है और सोशल मीडिया पर इसकी काफी बुराई की जा रही है। जहां कुछ लोग तनिष्क के इस ऐड को लव जिहाद को बढ़ावा देने वाला बता रहे हैं, वहीं कुछ लोगों का कहना है कि यह विज्ञापन हिंदू-मुस्लिम एकता का संदेश देता है। अब इस विज्ञापन के ऊपर ऐक्ट्रेस कंगना रनौत का भी तीखा रिऐक्शन आया है।

कंगना बोलीं- ये क्रिएटिव आतंकवादी...

हर मुद्दे पर बेबाकी से अपने विचार रखने वाली कंगना रनौत ने ट्विटर पर इस विज्ञापन के बारे में लिखा, एक हिंदू के तौर पर हमें बेहद सतर्क रहने की जरूरत हैं कि ये क्रिएटिव आतंकवादी हमारे अवचेतन मन में क्या घुसा रहे हैं, हमें इस बात पर जांच, बहस और मूल्यांकन करना चाहिए कि जो सोच हमारे दिमाग में भरी जा रही है उसका हम पर क्या असर हो रहा है। अपनी सभ्यता बचाने का सिर्फ यही एक तरीका है। लव जिहाद और लिंगभेद को बढ़ावा दे रहे

तनिष्क के विज्ञापन की तीखी आलोचना करते हुए कंगना ने लिखा, यह विज्ञापन कई तरह से गलत है। एक हिंदू बहू बहुत दिनों से परिवार के साथ रह रही है लेकिन उसे स्वीकार तब किया जाता है जब वह घर के वारिस को जन्म देने वाली होती है। तो क्या वह केवल बच्चा पैदा करने की मशीन है? यह विज्ञापन केवल लव जिहाद को ही नहीं बल्कि लिंगभेद को भी बढ़ावा देता है। तनिष्क ने हटा लिया है विज्ञापन

वैसे बता दें कि सोशल मीडिया पर लगातार इस विज्ञापन की आलोचना होने के बाद तनिष्क कंपनी ने इस विज्ञापन को वापस ले लिया है। इस विज्ञापन का यूट्यूब लिंक कंपनी ने प्राइवेट कर दिया है जिसके बाद लोग इस विज्ञापन को नहीं देख पा रहे हैं। काफी एक्सपट्र्स का कहना है कि इस विज्ञापन के कारण त्योहारी सीजन में तनिष्क को नुकसान उठाना पड़ सकता है।

आमिर खान की लाडली बेटी ईरा खान बनी टैटू आर्टिस्ट

अभिनेता आमिर खान की लाडली बेटी ईरा खान अक्सर सुर्खियों में रहती हैं। थियेटर निर्माण से निर्देशन के क्षेत्र में कदम रखने वाली ईरा इन दिनों फिर चर्चा में हैं और इसकी वजह है ईरा द्वारा बनाया गया उनका पहला टैटू। मल्टीटैलेंटेड ईरा अब टैटू आर्टिस्ट बन गई है। इसकी जानकारी खुद ईरा ने सोशल मीडिया पर दी। ईरा ने इंस्टाग्राम पर अपने द्वारा बनाए गए टैटू का एक वीडियो और एक तस्वीर को फैंस के साथ साझा किया है। इसके कैप्शन में ईरा ने लिखा- मैने अभी अपना पहला टैटू बनाया। शुक्रिया नुपुल शिकरे मुझ पर भरोसा करने के लिए। बुरा नहीं है ना? मुझे लगता है ये मेरा ऑल्टरनेटिव करियर हो सकता है। ईरा द्वारा बनाए गए इस टैटू की सोशल मीडिया पर जमकर तारीफ हो रही हैं। ईरा और उनके पहले क्लाइंट नूपुर ने टैटू बनवाने की कुछ तस्वीरों को अपनी इंस्टाग्राम स्टोरी पर भी साझा किया है। ईरा अक्सर अपनी बोल्डनेस के कारण चर्चा में रहती है। वहीं आमिर खान की बेटी ईरा खान के इस नए टैलेंट की हर कोई तारीफ कर रहा है। ईरा सोशल मीडिया पर काफी सक्रिय रहती हैं और उनके फैन फॉलोइंग की संख्या लाखों में हैं। इरा खान बॉलीवुड की पॉपुलर स्टार डॉटर्स में से एक हैं।

ब्वॉयफ्रेंड के साथ समुद्र किनारे मस्ती करती दिखीं तापसी पन्नू

बॉलीवुड एक्ट्रेस तापसी पन्नू अक्सर अपनी फिल्मों और सामाजिक मुद्दों पर अपनी बेबाक राय को लेकर खबरों में रहती हैं। इन दिनों एक्ट्रेस अपनी तस्वीरों की वजह से खबरों में हैं और उनकी फोटोज की काफी चर्चा हो रही हैं। इस बार एक्ट्रेस की कई बिकिनी फोटोज भी वायरल हो रही हैं और फैंस तापसी के इस लुक को काफी पसंद भी कर रहे हैं। दरअसल, एक्ट्रेस इन दिनों मालदीव ट्रिप पर थीं और वहां से लगातार अपने इंस्टाग्राम पर तस्वीरें शेयर कर रही थीं, जिनमें दिख रहा है एक्ट्रेस ने इस ट्रिप पर काफी मस्ती की है। एक्ट्रेस ने अपने अकाउंट पर कई फोटो और वीडियो पोस्ट किए हैं और उन्होंने इंस्टा स्टोरी में भी अपने ट्रिप की अपडेट दी थी। बता दें कि एक्ट्रेस इस ट्रिप पर अपनी बहन शगुन, इवानिया और अपने ब्वॉयफ्रेंड के साथ गई थीं। ग्रुप ने इस ट्रिप पर काफी मस्ती की, जो उनकी तस्वीरों से साफ पता चल रहा है। इन तस्वीरों में एक्ट्रेस समुद्र के किनारे बिकिनी में फोटोशूट करवाते और वीडियो बनाते हुए नज़र आ रही हैं। साथ ही उन्होंने अपनी बहन की भी कई तस्वीरें शेयर की हैं और उनकी फोटो में उनके ब्वॉयफ्रेंड भी दिखाई दे रहे हैं। आप भी इन तस्वीरों में देख सकते हैं कि एक्ट्रेस कितना क्वालिटी टाइम स्पेंड कर रही हैं और तापसी की ऐसी तस्वीरें बहुत कम देखने को मिलती हैं। इन फोटो में तापसी काफी खूबसूरत लग रही हैं और उनके पोस्ट में उनके फैंस उनकी काफी तारीफ कर रहे हैं। हालांकि, तापसी पन्नू विदेश में छुट्टियां एन्जॉय करते वक्त भी सोशल मीडिया पर एक्टिव रहीं। इस दौरान भी उन्होंने कई मुद्दों पर राय रखीं और सुपरस्टार अमिताभ बच्चन को उनके जन्मदिन पर विश किया। अब एक्ट्रेस वहां से आ गई हैं और उन्होंने अपनी इंस्टा स्टोरी में दिखाया है कि वो जा रहे हैं और वो इस प्लेस को काफी मिस करेंगे।

कुंडली भाग्य में करण और प्रीता रोमांटिक डांस करते आए नजर

जी टीवी का पॉपुलर सीरियल कुंडली भाग्य लॉकडाउन के बाद एक बार फिर दर्शकों का मनोरंजन करता नजर आ रहा हैण् लॉकडाउन के बाद श्कुंडली भाग्यश् में दिलचस्प ट्विस्ट देखने को मिल रहे हैं इस शो में करण धीरज धूपर और प्रीता श्रद्धा आर्यद्ध के वेडिंग ड्रामा ने दर्शकों को उनकी सीट से बांधे रखा है वहीं पवन ;अंकित गुप्ताद्ध ने अपनी एंट्री के बाद माहिरा के साथ मिलकर प्रीता और करण की जिंदगी में उथल.पुथल मचा दी हैउधर माहिरा ने भी प्रीता का अपहरण करने के बाद खुद प्रीता की तरह वेश बदल लिया है हालांकि किडनैपिंग के सीक्वेंस के बाद दर्शकों को अब इसमें एक रोमांटिक ट्रीट मिलने वाली हैए जिसमें उनकी फेवरेट जोड़ी करण और प्रीता रोमांटिक गाने श्आप हमारी जान बन गए पर झूमती नजर आएंगी हालांकि इस सीन के लिए दर्शकों को अभी थोड़ा इंतजार करना पड़ेगा लेकिन इसमें आने वाले छोटे.छोटे रोमांटिक पल उनमें रोमांच और उत्सुकता को और ज्यादा बढ़ा देंगे दिलचस्प बात यह है कि इन दोनों ने अपने डांस सीक्वेंस के लिए बिल्कुल भी तैयारी नहीं की थी इस रोमांटिक डांस की शूटिंग से पहले उन्होंने सेट पर ही क्रिएटिव टीम के साथ मिलकर इस सीक्वेंस को कोरियोग्राफ किया था कुंडली भाग्य में प्रीता का रोल निभा रहीं एक्ट्रेस श्रद्धा आर्य कहती हैं हम इस खास सीन की शूटिंग को लेकर काफी उत्साहित हैं क्योंकि हम जानते हैं कि हमारे फैंस करण और प्रीता को साथ देखना कितना पसंद करते हैंण्

जहां इस समय इस ट्रैक में माहिरा अपना बदला लेने की फिराक में है वहीं यह रोमांटिक डांस प्रीता और करण के सभी फैंस के लिए एक सुकून भरा एहसास होगाए जहां उन्हें पता चलेगा कि दोनों मन ही मन अब भी एक दूसरे से गहरा प्यार करते हैं और उन्हें कोई भी ताकत जुदा नहीं कर सकतीण् इस सीक्वेंस के लिए धीरज कीममतंर कीववचंत और मैंने ज्यादा रिहर्सल नहीं कीण् हम तो सिर्फ गाने के बहाव में बहते चले गएए जिसके बोल भी बड़े खूबसूरत हैं हमें उम्मीद है कि हमारे बीच आने वाले इन क्यूट और रोमांटिक पलों को दर्शक एंजॉय करेंगे और हमें इसी तरह अपना प्यार देते रहेंगे

पिता डेविड धवन के साथ अनबन की खबरों पर वरूण धवन की आई प्रतिक्रिया

बॉलीवुड के मशहूर अभिनेता वरूण धवन इन दिनों चर्चा में बने हुए है। इसका कारण है उनके पिता डेविड धवन के साथ वरूण धवन की अनबन। हालांकि अब इस पर खुद वरूण धवन ने अपनी प्रतिक्रिया दी है। अभिनेता वरूण धवन ने इस मामले पर अपनी बात पर अपनी प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि उनकी पक्ष तब तक नहीं लिखा जाना चाहिए जब तक कि वो किसी इंटरव्यू में नहीं कह देते। वरूण धवन ने अपने पिता के साथ अनबन की खबरों पर अपने सोशल मीडिया अकाउंट पर एक पोसट शेयर करते हुए लिखा कि, जब तक मैं आपको अपना साक्षात्कार नहीं दे देता, तब तक आपको मेरी ओर से खबर नहीं लिखना चाहिए। आपकी जानकारी के लिए बता दें कि कई दिनों से खबरें सामने आ रही थी कि वरूण धवन और डेविड धवन के बीच फिल्म कुली नंबर वन की रिलीज डेट को लेकर असहमति और अनबन थी। ये खबरें सामने आते ही काफी तेजी से चर्चा में आने लगी और इस पर कई तरह की बाते भी होने लगी। अगर हम बात करे फिल्म कुली नंबर वन की तो इस कोरोना वायरस महामारी के बीच फिल्म की रिलीज में काफी देरी हुई थी। जिसकी वजह से डेविड धवन काफी समय से ओटीटी पर फिल्म को रिलीज करने का विचार कर रहे थे। जबकि अभिनेता वरूण धवन अपने पिता की इस बात से सहमत नहीं थे क्योंकि वह एक ओटीटी अभिनेता को लेबल नहीं चाहते थे। इसकी वजह से दोनों के बीच अनबन थी। फिल्म कुली नंबर वन में वरूण धवन के अलावा अभिनेत्री सारा अली खान मुख्य किरदार में नजर आएंगी। जिसका निर्देशन डेविड धवन ने किया है। जो गोविंदा और करिश्मा कपूर की फिल्म का रीमेक है।

सोशल मीडिया पर एक दूसरे की टांग खिचाई करते हुए नजर आए ईशान खट्टर और अनन्या पांडे

बॉलीवुड के मशहूर कलाकार ईशान खट्टर और अनन्या पांडे की फिल्म खाली पीली जल्द ही रिलीज होने वाली है। जिसको लेकर इन दिनों कई तरह की खबरें सामने आ रही है। फिल्म में ईशान खट्टर और अनन्या पांडे की जबरदस्त केमिस्ट्री देखने को मिलने वाली है। लेकिन फिल्म की रिलीज से पहले इस वक्त दोनों ही कलाकार अपनी फिल्म का प्रमोशन करते हुए नजर आ रहे है। अब इसी बीच अभिनेता ईशान खट्टर ने हाल ही में अपने सोशल मीडिया अकाउंट पर एक पोस्ट शेयर किया है जिसमे अनन्या पांडे ने उनकी लेग पोलिंग की है। ईशान खट्टर ने अपनी एक तस्वीर को शेयर करते हुए कैप्शन में लिखा कि, हम अभी जंगल में हैं। अनन्या पांडे ने ईशान खट्टर की तस्वीर पर कमेंट करते हुए लिखा कि, हां, तुम जंगल में हो और वहां की हर जीच से डरते हो। अनन्या के इस कमेंट पर जवाब देते ईशान ने लिखा कि, मेरे पास बिच्छू के साइज का आईफोन है और कम से कम मैं चींटी के काटने से 3 दिन तक रोता नहीं रहा। अनन्या रिप्लाई करती हैं, ईशान वो चींटी के काटने का निशान आईपैड जितना बड़ा था। तो तुम चुप रहो। खैर दोनों के बीच सोशल मीडिया पर ये जुबानी जंग चलती रहती। अगर हम बात करें फिल्म खाली पीली की तो ये जल्द ही सिनेमा घरों में रिलीज होने वाली है। आगामी 15 अक्टूबर से सिनेमा हॉल खुलने वाला है जिसकी वजह से फिल्म का प्रमोशन इन दिनों किया जा रहा है। फिल्म में पहली बार ईशान खट्टर और अनन्या पांडे की जोड़ी नजर आने वाली है। फिल्म खाली पीली लॉकडाउन के बाद 16 अक्टूबर को रिलीज होने वाली पहली फिल्म होगी।

प्रभास की अपकमिंग साई-फाई फिल्म के लिए 20 करोड़ रुपये लेंगी दीपिका पादुकोण?

पिछले कुछ दिनों से लगातार खबरें आ रही थी कि दीपिका पादुकोण जल्द ही बाहुबली फेम एक्टर प्रभास की आने वाली फिल्म में उनके साथ स्क्रीन स्पेस शेयर करती नजर आएं

अमृता राव बनने वाली हैं मां, बेबी बंप के साथ सामने आई पहली तस्वीर

बॉलीवुड एक्ट्रेस अमृता राव मां बनने वाली हैं। हाल ही में उन्हें पति आरजे अनमोल के साथ खार स्थित एक क्लिनिक के बाहर स्पॉट किया गया। अमृता की एक तस्वीर भी सामने आई है, जिसमें उनका बेबी बंप साफ नजर आ रहा है। बताया जा रहा कि यह फोटो डॉक्टर के क्लिनिक विजिट के दौरान खींची गई है। टाइम्स ऑफ इंडिया से एक सोर्स ने कहा, अमृता अपनी लाइफ के इस समय को बहुत एंजॉय कर रही हैं। उनकी प्रेग्नेंसी के बारे में ज्यादातर लोगों को पता नहीं है। कपल के करीबी लोग ही इस बारे में जानते हैं। वह लॉकडाउन से पहले प्रेग्नेंट हुई थीं और वह काफी खुश हैं। अमृता और अनमोल दोनों अपनी जिंदगी को बेहद निजी तौर पर जीते हैं। बताते चलें कि अमृता और अनमोल ने 7 साल तक एक-दूसरे को डेट करने के बाद 2016 में शादी की थी। उनकी शादी में परिवार और सिर्फ करीबी दोस्त ही शामिल हुए थे। अमृता के प्रोफेशनल लाइफ की बात करें तो उन्होंने फिल्म अब के बरस से बॉलीवुड में डेब्यू किया था। यह फिल्म साल 2002 में रिलीज हुई थी। फिल्म में उन्होंने आर्य बब्बर के साथ काम किया था। इसके अलावा अमृता साउथ की कई फिल्मों में काम कर चुकी हैं। इश्क-विश्क और विवाह में अमृता राव और शाहिद कपूर की केमेस्ट्री को काफी पसंद किया गया था। गौरतलब है कि अमृता आखिरी बार बाला साहेब ठाकरे की बायोपिक में नजर आईं थीं। इस फिल्म में उन्होंने बाल ठाकरे की वाइफ मीना ठाकरे का किरदार निभाया था। फिल्म में उन्होंने नवाजुद्दीन सिद्दिकी के साथ स्क्रीन शेयर किया था। इस फिल्म में उनकी परफॉर्मेंस को खूब सराहा गया था।

कंचन उजाला हिंदी दैनिक

स्वामी नमोकंचन कार्पोरेट सर्विसेस (एल.एल.पी) के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक कंचन सोलंकी द्वारा उमाकान्ती ऑफसेट प्रेस, ग्राम डेहवा पोस्ट मोहनलाल गंज लखनऊ से मुद्रित एवं 61/18 चुटकी भण्डार हुसैनगंज लखनऊ से प्रकाशित।

संपादक- कंचन सोलंकी

TITLE CODE- UPHIN48974

Mob: 8896925119, 9695670357

Email: kanchansolanki397@gmail.com

नोटः समाचार पत्र में प्रकाशित समाचारो एवं लेखों से संपादक का सहमत होना अनिवार्य नही। समस्त विवादो का निस्तारण लखनऊ न्यायालय के अधीन होगा।